ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1215/170-179/છ, તા. 23-3-2016 – થી મંજૂર

हिन्दी

(द्वितीय भाषा)

कक्षा 9

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर-382 010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है । इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

विषय परामर्शन
डॉ. चन्द्रकान्त मेहता

लेखन-संपादन
डॉ. चंदुभाई स्वामी (कन्वीनर)
डॉ. गिरीशभाई त्रिवेदी
डॉ. जे.बी. जोशी
श्री महेशभाई उपाध्याय
डॉ. वर्षाबहन पारेख
डॉ. सविताबहन डामोर
श्री पुलकित जोशी
श्री प्रीतिबहेन राठोड

समीक्षा
डॉ. रवीन्द्र अंधारिया
डॉ. नयना डेलीवाला
डॉ. गीता जगड
डॉ. लेखा स्वामी
डॉ. प्रेमसिंह क्षत्रिय
श्री वीरेन्द्रगिरि गोंसाई
श्री पंकज मारु

संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन
डॉ. कमलेश एन. परमार
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गये नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 9, हिन्दी (द्वितीय भाषा)** की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक के हस्तप्रत निर्माण की प्रक्रिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रखते हुए तैयार की है । एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय, उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है ।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रकशित करने से पहले इसी विशेषज्ञों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों ध्वारा सवाँगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।

भाषाकीय नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य यह है, कि इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा-अभिव्यक्ति को विशेष प्रभावशाली बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खुबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सिखें, इस लिए स्व-लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रूचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है ।

एच. एन. चावडा
नियामक

डॉ. नीतिन पेथाणी
कार्यवाहक प्रमुख

दिनांक : 07-8-2016 **गांधीनगर**

प्रथम संस्करण : 2016, पुनःमुद्रण : 2017

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, विद्यायन, सेक्टर-10ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावडा, नियामक

मुद्रक :

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह – *

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ;ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं ;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे ;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे ;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;

(झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले ;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

अनुक्रमणिका

1.	आराधना	(काव्य)	वसंत बापट	1
2.	न्यायमंत्री	(कहानी)	श्री सुदर्शन	3
3.	क्या निराश हुआ जाए	(निबंध)	हजारीप्रसाद द्विवेदी	7
●	मुहावरें			11
4.	कर्ण का जीवनदर्शन	(खंडकाव्य)	रामधारीसिंह दिनकर	12
5.	स्वराज्य की नींव	(एकांकी)	विष्णु प्रभाकर	15
●	अशुद्ध और शुद्ध वाक्य			20
6.	मेरी बीमारी श्यामा ने ली	(आत्मकथा अंश)	हरिवंशराय बच्चन	25
7.	सूरदास के पद	(पद)	सूरदास	29
8.	गुलमर्ग की खिड़की से एक रात	(यात्रा वर्णन)	मोहन राकेश	31
9.	निर्भय बनो	(उपन्यास अंश)	फणीश्वरनाथ रेणु	34
●	कहावतें			38
10.	भारत गौरव	(काव्य)	मैथिलीशरण गुप्त	41
11.	एक यात्रा यह भी	(कहानी)	रामदरश मिश्र	44
12.	रानी	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा	49
●	वर्तनी			53
13.	नीति के दोहे	(दोहे)	रहीम	60
14.	युग और मैं	(काव्य)	नरेन्द्र शर्मा	62
15.	दाज्यू	(कहानी)	शेखर जोशी	65
16.	भारतीय संस्कृति में गुरुशिष्य संबंध	(निबंध)	आनंदशंकर माधवन	69
●	शब्द-संरचना			72
17.	तुलसी के पद	(पद)	तुलसीदास	81
18.	अंधेरी नगरी	(एकांकी)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	84
19.	महाकवि कालिदास	(जीवनी)	नरपत बारहठ हडवैचा	89
●	वाक्य तथा वाक्य के प्रकार			93
20.	धरती की शान	(गीत)	पंडित भरत व्यास	99
21.	क्रांतिकारी शेखर का बचपन	(उपन्यास अंश)	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन - 'अज्ञेय'	102
●	स्वर संधि			105
22.	वीरों का कैसा हो वसंत	(गीत)	सुभद्राकुमारी चौहान	111
23.	जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी	(संस्मरण)	धर्मवीर भारती	113
●	समास			116
24.	दोहे	(दोहे)	कबीर	122

पूरक-वाचन

1.	विमान से छलांग	(पत्र)	श्यामचन्द्र कपूर	125
2.	राष्ट्र का स्वरूप	(निबंध)	वासुदेवशरण अग्रवाल	127
3.	कुण्डिलयाँ	(कविता)	गिरिधर	130
4.	महान भारतीय वैज्ञानिक : विक्रम साराभाई	(लेख)	पी.सी. पटेल	131

●

1	# आराधना

वसंत बापट

(जन्म : सन् 1922, निधन : 2002 ई.)

श्री वसंत बापट ख्यातनाम कवि हैं, आपका जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के कराड नामक गाँव में हुआ था । पूणे आपकी कर्मभूमि है । राष्ट्रसेवादल में आप अग्रणी रहे हैं । व्यवसाय से प्राध्यापक रहे। आपके काव्यों में राष्ट्रभक्ति, समाज जागरण एवं मानवीय संवेदनाएँ व्यक्त हुई हैं । सेतु, बिजली, सकीना, अकरावी (ग्यारहवीं) दिशा, तेजसी आपकी रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत प्रार्थना मे 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की भावना के साथ दीन-दुखियों की रक्षा करना, मानवता की उपासना करना, भेदभावों को दूर करना, बैरभाव से मुक्त हो कर विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना- जैसे वैश्विक मूल्यों को हस्तान्तरण करने की प्रेरणा देनेवाली यह प्रार्थना मराठी से अनुदित है ।

देहमंदिर, चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।
सत्य-सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना॥

दुखियारों का दुःख जाए, है यही मनकामना।
वेदना को परख पाने जगाएँ संवेदना॥
दुर्बलों के रक्षणार्थ पौरुष की साधना॥

जीवन में नवतेज हो, अंतरंग में भावना।
सुंदरता की आस हो मानवता की हो उपासना॥
शौर्य पावें, धैर्य पावें, यही है अभ्यर्थना॥

भेद सभी अस्त होवें, वैर और वासना॥
मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना।
मुक्त हम, चाहें एक ही बंधुता की कामना॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रार्थना निवेदन करना, भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक ईश्वर की माँगना **मांगल्य** मंगलकारी **नित्य** निरंतर, प्रतिदिन, हर-रोज **आराधना** पूजा **वेदना** कष्ट, व्यथा **परख** गुण-दोष को निश्चित करने की परीक्षा **संवेदना** अनुभूति, सहानुभूति **दुर्बल** कमज़ोर **साधना** उपासना, आराधना **अंतरंग** शरीर के भीतरी अंग (मन, मस्तक) **आस** आशा, भरोसा, सहारा, कामना **मानवता** मनुष्यता **आसना** आराधना, भक्ति **धैर्य** धीरता, धीरज, सब्र **अभ्यर्थना** अनुरोध, बिनती **अस्त** ओझल, अंत, नाश, समाप्त **बैर** दुश्मनी, शत्रुभाव **वासना** कामना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) कवि नित्य कैसी आराधना चाहते हैं?
   (2) कवि किसकी मनोकामना चाहते हैं?
   (3) कवि दुर्बलों के रक्षणार्थ किसकी साधना चाहते हैं?
   (4) कवि किसकी अभ्यर्थना करते हैं?
   (5) कवि कैसी बंधुता की कामना करते हैं?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(1) कवि कैसे मांगल्य की आराधना करते हैं?

(2) कवि के अनुसार किसके दु:ख दूर होने चाहिए?

(3) कवि की क्या अभ्यर्थना हैं?

(4) कवि भेदों को नाश करने की बात क्यों करते हैं?

3. **निम्नलिखित काव्यपंक्तिओं का आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) देहमंदिर चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।
सत्य सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना॥

(2) भेद सभी अस्त होने बैर और वासना
मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना
मुक्त हमें चाहे एक ही बंधुता की कल्पना॥

4. **काव्यपंक्तिओं को पूर्ण कीजिए :**

(1) देहमंदिर चित्तमंदिर एक ही.................
....
पौरुष की साधना।।

(2) जीवन में नवतेज हो......................
....
बंधुता की कामना॥

5. **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।**

(1) दु:ख (2) जीवन (3) सत्य (4) सुंदर (5) अस्त

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पठित प्रार्थना गीत को कंठस्थ कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'आराधना' प्रार्थना गीत का समूहगान करवाइए।
  अन्य भाषाओं के प्रार्थना-गीतों का छात्रों से संकलन करवाइए।

●

2	न्यायमंत्री

श्री सुदर्शन

(जन्म : सन् 1896 ई. : निधन : सन् 1968 ई.)

'सुदर्शन'जी का मूल वास्तविक नाम बदरीनाथ शर्मा था । आपका जन्म 1896 ई. पंजाब राज्य के सियालकोट नामक स्थान में हुआ था । बचपन से ही आपने कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया था ।

पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, नगीना आदि आपके सुप्रसिद्ध कहानीसंग्रह हैं। आपका एकमात्र उपन्यास है - भागवंती।

इस कहानी में सम्राट अशोक सर्वश्रेष्ठ न्यायमंत्री की खोज में था, शिशुपाल से मुलाकात होने पर उसकी योग्यता देखकर उसे न्यायमंत्री बनाया। न्याय न राजा देखता है न रंक। न्यायतंत्र पर विश्वास दिलाने के लिए यहाँ प्रयास किया है। नयी पीढ़ी के लिए इस प्रेरक कहानी द्वारा न्यायतंत्र की जिम्मेदारी का भी महत्त्व समझाया गया है।

संध्या का समय था। चारों ओर अंधकार फैल चुका था। ऐसे में किसी ने बाहर से घर का दरवाजा खटखटाया।

''कौन है?'' ब्राह्मण शिशुपाल ने थोड़ा सा दरवाज़ा खोलते हुए पूछा।

''एक परदेशी'' बाहर से आवाज़ आई- ''क्या मुझे रात काटने के लिए स्थान मिल जाएगा?''

जैसे ही शिशुपाल ने पूरा दरवाज़ा खोला, उनके सामने एक नवयुवक खड़ा था। उन्होंने मुस्कराकर कहा- ''यह मेरा सौभाग्य है। अतिथि के चरणों से यह घर पवित्र हो जाएगा। आइए पधारिए।''

अतिथि को लेकर शिशुपाल घर में गए और उनका आदर-सत्कार किया।

फिर दोनों उस समय की देश की अवस्था पर बातें करने लगे। शिशुपाल ने कहा- ''आजकल बड़ा अन्याय हो रहा है।'' परंतु परदेशी इस बात से सहमत न था। वह बोला- ''दोष निकालना तो सुगम है परंतु कुछ करके दिखाना कठिन है,'' शिशुपाल बोले- ''अवसर मिले तो दिखा दूँ कि न्याय किसे कहते हैं?''

''तो आप अवसर चाहते हैं?''

''हाँ, अवसर चाहता हूँ।''

''फिर कोई अन्याय नहीं होगा?''

''बिलकुल नहीं।''

''कोई अपराधी दंड से न बचेगा।''

''नहीं।''

परदेशी ने मुस्कराकर कहा- ''यह बहुत कठिन काम है।''

''ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं। मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।''

परदेशी धीरे से मुस्कराए, पर कुछ न बोले, फिर कुछ देर बाद वे सो गए।

सुबह उठकर परदेशी ने शिशुपाल को धन्यवाद देकर उनसे विदा ली।

कुछ दिनों बाद शिशुपाल के घर कुछ सिपाही आए और उन्हें दरबार में चलने के लिए कहा। शिशुपाल सहम गए। वे समझ नहीं सके कि सम्राट ने उन्हें क्यों बुलाया है। कहीं उस परदेशी ने तो सम्राट से झूठी-सच्ची शिकायत नहीं कर दी। दरबार में पहुँचकर शिशुपाल का कलेजा धड़कने लगा जब उन्होंने देखा कि परदेशी ही सम्राट अशोक हैं।

सम्राट बोले- ''ब्राह्मण देवता! मैं आपको न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार हैं?''

पहले तो शिशुपाल घबराए, फिर बोले- ''यदि सम्राट की यही इच्छा है तो मैं तैयार हूँ।''

''बहुत ठीक, कल से आप न्यायमंत्री हुए'' सम्राट ने कहा और अपने हाथ से अँगूठी उतारकर शिशुपाल को पहना दी। यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा थी।

अब शिशुपाल न्यायमंत्री थे। उन्होंने राज्य की समुचित व्यवस्था करना आरंभ कर दिया। उनके सुप्रबंध से राज्य में पूरी तरह शांति रहने लगी। किसी को किसी प्रकार का भय नहीं था, लोग दरवाज़े तक खुले छोड़ जाते थे। चारों तरफ़ न्यायमंत्री के सुप्रबंध और न्याय की धूम मच गई।

लगभग एक महीने बाद, किसी ने रात में एक पहरेदार की हत्या कर दी। सुबह होते ही यह बात चारों तरफ़ फैल गई। लोग बड़े हैरान थे। शिशुपाल की तो नींद ही उड़ गई। उन्होंने खाना-पीना छोड़कर अपराधी का पता लगाने में रात-दिन एक कर दिया।

बहुत प्रयत्न करने के बाद जब अपराधी का पता चला तो शिशुपाल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। स्वयं सम्राट ने उस पहरेदार की हत्या की थी। सम्राट को अपराधी घोषित करना बहुत ही कठिन काम था। शिशुपाल करें भी तो क्या करें? एक ओर वे न्यायमंत्री थे और दूसरी ओर सम्राट के सेवक, परंतु न्याय की दृष्टि में सम्राट और साधारण व्यक्ति में कोई अंतर नहीं होता।

अगले दिन शिशुपाल दरबार में पहुँचे। सम्राट अशोक सिंहासन पर बैठे हुए थे। आते ही उन्होंने शिशुपाल से पूछा- ''अपराधी का पता चला?''

न्यायमंत्री ने साहसपूर्वक कहा- ''जी हाँ, चल गया।''

''तो फिर उसे उपस्थित करो।''

न्यायमंत्री कुछ रुके, फिर अपने उच्च अधिकारी को संकेत करते हुए बोले ''धनवीर! इन्हें गिरफ़्तार कर लो, मैं आज्ञा देता हूँ।''

संकेत सम्राट की ओर था।

दरबार में निस्तब्धता छा गई । सम्राट का चेहरा क्रोध से लाल हो गया । वे सिंहासन से खड़े हो गए और बोले- ''इतना साहस?''

न्यायमंत्री ने ऐसा भाव प्रकट किया जैसे कुछ सुना ही न हो । उन्होंने अपने शब्दों को फिर दुहराया- ''धनवीर! देखते क्या हो? अपराधी को गिरफ़्तार करो।

दूसरे ही क्षण सम्राट के हाथों में हथकड़ी पड़ गई ।

न्यायमंत्री ने कहा- ''अशोक! तुम पर पहरेदार की हत्या का आरोप लगाया जाता है, तुम इसका क्या उत्तर देते हो?'' सम्राट होंठ काटकर रह गए।

न्यायमंत्री ने फिर पूछा- ''तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?'' हाँ, मैंने उसे मारा अवश्य है, पर उद्दंड था।'' सम्राट का उत्तर था । ''वह उद्दंड था या नहीं, तुमने एक राजकर्मचारी की हत्या की है। तुम अपराधी हो। तुम्हें मृत्युदंड दिया जाता है।'' न्यायमंत्री ने निर्णय दिया।

सभा में सन्नाटा छा गया। न्यायमंत्री का निर्णय सुन सम्राट ने सिर झुका लिया। वे तो स्वयं शिशुपाल की परीक्षा में सफल हो गए थे। सम्राट का हृदय ऐसे व्यक्ति को पाकर गद्‌गद हो रहा था।

तभी न्यायमंत्री का संकेत पाकर एक कर्मचारी सम्राट अशोक की सोने की मूर्ति लेकर उपस्थित हो गया। न्यायमंत्री ने खड़े होकर कहा- ''सज्जनो! यह सच है कि मैं न्यायमंत्री हूँ और यह भी सच है कि अपराधी को दंड मिलना चाहिए परंतु अपराधी और कोई नहीं स्वयं सम्राट हैं। शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना गया है इसलिए उसे ईश्वर ही दंड दे सकता है। अतएव मैं आज्ञा देता हूँ कि सम्राट को चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए और उनके स्थान पर इस सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए जिससे लोगों को शिक्षा मिले।''

न्यायमंत्री का न्याय सुनकर लोग जय-जयकार कर उठे। जब सब लोग चले गए तो शिशुपाल ने राजमुद्रा सम्राट अशोक के सामने रख दी और बोले- ''महाराज! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।''

अशोक ने सम्मानभरी दृष्टि से उनकी ओर देखते हुए गद्‌गद कंठ से कहा- ''आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। आपका साहस प्रशंसनीय है। यह बोझ आपके अतिरिक्त और कोई नहीं उठा सकता।'' न्यायमंत्री निरुत्तर हो गए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सौभाग्य सद्‌नसीब **सुगम** सरल **अवसर** मौका **राजमुद्रा** राष्ट्र की निशानी **सुप्रबंध** सुव्यवस्था **उद्दंड** अविवेकी **नि:स्तब्धता** शांति

मुहावरें

सहम जाना - आश्चर्यचकित हो जाना । **कलेजा धड़कना** - चिंतित होना **धूम मच जाना** - प्रसिद्ध हो जाना। **रात-दिन एक करना** - कड़ी मेहनत करना। **होठ काटना** - आश्चर्य में पड़ना। **सिर झुकाना** - लज्जित होना। **गद्‌गद हो जाना** - भावविभोर हो जाना। **आँखें खोल देना** - सही परिस्थिति समजाना।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए।

(1) शिशुपालने अपने घर का दरवाजा क्यों खोल दिया?

(2) शिशुपाल किस अवसर की तलाश में था?

(3) न्याय के विषय में शिशुपाल के क्या विचार थे?

(4) परदेशी कौन था ? उसने दूसरे दिन क्या किया ?

(5) सम्राट अशोक ने शिशुपाल को राजमुद्रा क्यों दी?

(6) राज्य में न्याय के विषय में परिस्थितियाँ कैसे बदल गई?

(7) पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की स्थिति कैसी हो गई?

(8) अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने क्या किया ?

2. विस्तार से उत्तर दीजिए :

(1) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री की खोज कैसे की?

(2) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री का पद देने हुए शिशुपाल को क्या दिया?

(3) सम्राट अशोक क्यों गद्‌गद हो गए?

(4) न्यायमंत्री ने अपराधी सम्राट के जीवन की रक्षा किस प्रकार की?

(5) न्यायमंत्री निरुत्तर क्यों हो गए?

3. निम्नलिखित विधान कौन कहता है ? क्यों ?

(1) ''यह मेरा सौभाग्य है ।''

(2) ''दोष निकालना तो सुगम है परंतु कुछ कर दिखाना कठिन है।''

(3) ''ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं । मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।''

(4) तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?

(5) महाराज! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।

4. विरोधी शब्द दीजिए :

परदेशी, आदर, अपराधी, सुप्रबंध, गिरफ़्तार, स्वीकार

5. समानार्थी शब्द दीजिए :

अतिथि, सुगम, कठिन, हैरान, नि:स्तब्धता, निरुत्तर

6. सोचकर बताइए :

(1) अगर आप न्यायमंत्री होते तो क्या करते?

(2) सम्राट अशोक की आँखें किस कारण खुल गईं?

(3) शिशुपाल के साहस की सम्राट अशोक ने क्यों प्रशंसा की?

7. **न्यायमंत्री के रूप में शिशुपाल को घोषित करते हुए सम्राट अशोक ने राजमुद्रा दी इसका अर्थ है-**

(अ) मैं आपसे प्रसन्न हूँ।

(ब) आपके न्यायमंत्री होने की यह तनरुवाह है।

(क) यह मेरी ओर से पुरस्कार है।

(ड) यह तुम्हारे न्यायमंत्री होने की पहचान है।

योग्यता-विस्तार

- आपने प्रति अन्याय हुआ हो इस विषय में अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- आपको कहीं पर अन्याय हुआ हो, उसका वर्णन करते हुए न्याय प्राप्ति के लिए क्या प्रयास किए? उसकी चर्चा करें या लिखित ग्रंथ तैयार करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इस कहानी का नाट्य-रूपांतर करके प्रार्थना सभा या रंगमंच पर प्रस्तुत करवाइए।

●

3 क्या निराश हुआ जाए

हजारीप्रसाद द्विवेदी

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1979 ई.)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया (उ.प्र.) जिले के 'दूबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ था। पारिवारिक परंपरा अनुसार संस्कृत का अध्ययन शुरू करके उन्होंने हिन्दू काशी विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के आश्रम में 1940 ई.से. 1950 ई. तक हिन्दी भवन के निर्देशक रहे। तत्पश्चात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर कार्य किया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

हिन्दी साहित्य जगत में द्विवेदीजी एक निबंधकार, उपन्यासकार, समालोचक तथा शोधकर्ता इतिहासकार के रूप में प्रचलित हैं। 'अशोक के फूल', 'विचारप्रवाह', 'कुटज', 'कल्पलता' आदि निबंधसंग्रह; 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'चारुचंद्रलेख', 'अनामदास का पोथा', उपन्यास तथा 'कबीर', 'सूरदास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'साहित्य सहचर', 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास' (हिन्दी साहित्य की भूमिका) आदि आलोचना तथा इतिहास ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत निबंध में द्विवेदीजी ने यह समझाया है कि तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त अनाचार केवल बाहरी स्तर पर है; वास्तव में आज भी लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था कायम है। अपने जीवन में घटित कुछ घटनाओं के द्वारा बताया है कि हमें निराश नहीं होना चाहिए अपितु हमें जीवन के प्रति आस्थावान बने रहना चाहिए।

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्र में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता, जो कुछ भी करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दीख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान् संस्कृत-सभ्य भारतवर्ष किसी अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है, ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले-भोले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदार को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परंतु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्यनिर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए, नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते है, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते है, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन

तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं, जो कृषि उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन हर समय पवित्र नहीं होता। प्राय: वे ही लक्ष्य को भूल जाते और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गई। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान् और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए । आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज से उन तत्त्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्‌घाटित करते समय उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्‌घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात हैं, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, ''यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उनके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई हैं, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस-यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी ओर तीन बच्चे भी थे, बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई पाँच मील पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर ऊपर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ''यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूट लिया गया था।'' परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़ कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, ''हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।'' डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है, परंतु यात्री इतने घबरा गए कि वे मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ''इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।''

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और मेरी पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है, तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। ये गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।'' फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडितजी ! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।'' यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गई! जीवन में न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुत: आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तस्करी चोरी **मनीषी** पंडित, मेधावी **माहौल** परिस्थिति **निरीह** निराधार **फरेब** धोखा **भीरु** कायर **आलोड़न** मथना, हिलोरना **निकृष्ट** अधम, नीच **गुमराह** भुला हुआ **पैमाना** मापदंड **दकियानूसी** पुराने ख्यालवाला **त्रुटि** कमी, गलती **कातर** लाचार

मुहावरे

मन बैठ जाना उदास होना, मन मारना **फलना-फूलना** समृद्ध होना, विकसित होना **पर्दाफाश करना** भेद खोलना **ज्योति बुझना** मरना **कातर ढंग से देखना** भयभीत होकर देखना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नो के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) आज समाचारपत्र में कौन-कौन से समाचार भरे रहते हैं?
   (2) देश का वातावरण आज कैसा बन गया है?
   (3) भारतवर्ष ने किसको अधिक महत्त्व नहीं दिया है?
   (4) मनुष्य के मन में कौन-कौन से विचार है?
   (5) भारतवर्ष किसको धर्म रूप में देखता आ रहा है?
   (6) बस कंडक्टर क्या लेकर लौटा था?
2. **निम्नलिखित प्रश्नो के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**
   (1) लोगों में महान मूल्यों के बारे में आस्था क्यों हिल गई है?
   (2) लेखक क्या देखकर हताश हो जाना उचित नहीं मानते?
   (3) देश के दरिद्रजनों की हीन अवस्था दूर करने के लिए क्या किया गया है?
   (4) कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना-गीत द्वारा भगवान से क्या याचना की है?
3. **निम्नलिखित प्रश्नो के पाँच-छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) लेखक का मन क्यों बैठ जाता है?
   (2) भारतवर्ष को 'महामानव' समुद्र क्यों कहा गया है?
   (3) धर्म को भारतवर्ष में श्रेष्ठ क्यों माना गया है?
   (4) कंडक्टरने अपनी ईमानदारी कैसे बताई?
4. **मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
   मन बैठ जाना, पर्दापत्रक करना, फलना-फूलना, हवाइयाँ उडना, पर्दाफाश, ढाँढस बँधाना, कातर ढंग से देखना
   शब्द-समूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :
   धर्म से डरनेवाले, मिलन की भूमि, सुख देनेवाला
5. **विशेषण बनाइए :**
   भारत, समाज, क्रोध, समय, धर्म
6. **भाववाचक बनाइए :**
   डाकू, आदमी, बहुत, सभ्य, मानव
7. **विरोधी शब्द बनाइए :**
   ईमानदार, भ्रष्टाचार, आंतरिक, सबल

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता।
  हर अंधकार के पीछे सुबह का सूरज अवश्य छिपा होता है।
  - दोनों विधानों को समझाइए:

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'निराश नहीं होना चाहिए। इस विषय की चर्चा कीजिए।
  भारतवर्ष के 'महान मनीषियों' के बारे में वर्ग में अधिक जानकारी दीजिए।

मुहावरे

* **जब कोई वाक्यांश अपने साधारण (शाब्दिक) अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को व्यक्त करे, तो उसे मुहावरा कहते हैं। जैसे नीचे दिए गए उदाहरणों पर ध्यान दीजिए-**

मुहावरा	**शाब्दिक अर्थ**	**विशेष अर्थ**
- चिकना घडा	ऐसा घडा जो चिकना हो	जिस पर किसी बात का असर न हो
- होंठ काटना	होंठ को काटना	आश्चर्य में पड़ना
- रात-दिन एक करना	रात और दिन को एक करना	कड़ी मेहनत करना

* **मुहावरे के प्रयोग में निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए:**

(1) मुहावरों का प्रयोग उनके असली रूपों में ही करना चाहिए । उनके शब्द बदले नहीं जाते हैं। जैसे 'अक्ल का दुश्मन' एक मुहावरा है। यदि इसके स्थान पर 'अक्ल का शत्रु' प्रयोग किया जाए या 'नौ-दो ग्यारह होना' की जगह 'आठ तीन ग्यारह होना' किया जाए तो सर्वथा अनुचित है।

(2) मुहावरे वाक्यों में ही शोभते हैं, अलग नहीं। जैसे - यदि कहें 'कान काटना' तो इसका कोई अर्थ व्यंजित नहीं होता, किन्तु यदि ऐसा कहा जाय - 'वह छोटा बच्चा तो बड़े-बडों के कान काटता हैं' तो वाक्य में अद्‌भुत लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह स्वत: आ जाता है।

(3) मुहावरे का प्रयोग करते समय इस बात का सदैव ख्याल रखना चाहिए कि समुचित परिस्थिति, पात्र, घटना और प्रसंग का वाक्य में उल्लेख अवश्य हो। केवल वाक्य-प्रयोग कर देने पर संदर्भ के अभाव में मुहावरे अपने अर्थ को अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं।

जैसे - नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना ।

इस मुहावरे का वाक्यप्रयोग और स्पष्टता समझिए ।

वाक्यप्रयोग : शेर को देखते ही हिरण नौ दो ग्यारह हो गया।

स्पष्टता : शेर, हिरण का शिकार करता है; क्योंकि वह शेर का भक्ष्य है। कोई जीव जान बुझकर मरना नहीं चाहता। अतएव, शेर को देखकर हिरण अपनी जान बचाने के लिए भागेगा ही । 'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ व्यंजित हुआ - 'भाग जाना' ।

यदि सीधा ऐसा वाक्य बनाया जाय- 'हिरण नौ दो ग्यारह हो गया' - तो मुहावरे का अर्थ बिलकुल स्पष्ट नहीं हो पाएगा ।

(4) मुहावरे का एक विलक्षण अर्थ होता है । इसमें वाच्यार्थ का कोई स्थान नहीं होता। जैसे- 'आग में घी डालना' का जब वाक्यप्रयोग होगा, तब इसका अर्थ होगा- 'क्रोध को भड़काना ।'

(5) मुहावरों के वाक्य-प्रयोग अलग-अलग रूप से हो सकते हैं-

जैसे : पानी-पानी होना - बहुत लज्जित होना ।

1. इसमें पानी-पानी होने की क्या जरूरत है ? इस उम्र में ऐसी गलतियाँ हो ही जाती है।
2. तुम कुछ भी कहो, वह आज सबके सामने उन्हें पानी-पानी करके छोडेगा।
3. बात में जरुर दम है, तभी तो वह व्यक्ति आज मेरे सामने पानी-पानी है।
4. भरी सभा में पोल खुल जाने से मुखियाजी पानी-पानी हो गए।

●

4	# कर्ण का जीवन-दर्शन

रामधारीसिंह 'दिनकर'

(जन्म : ई. सन् 1908 : निधन : ई. सन् 1974)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगरे जिले के सिमरिया नामक गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा मुंगेर तथा उच्च शिक्षा पटना में प्राप्त की। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करके कुछ समय तक अध्यापनकार्य किया। दिनकरजी सीतामढ़ी में सब रजिस्ट्रार और मुज्जफरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। वे भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष भी रहे थे।

दिनकरजी की सब-से बड़ी विशेषता है- अपने देश और युग के प्रति-जागरूकता। कवि ने तत्कालीन घटनाओं - विषमताओं का खुलकर चित्रण किया है। उनकी वाणी में शक्ति है, ओज है। उनकी कविता में शोषित और पीड़ित वर्ग की व्यथा और उससे मुक्ति का संघर्ष है।

'उर्वशी', 'रश्मिरथी', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरूक्षेत्र' उनकी काव्यकृतियाँ हैं। 'उर्वशी' के लिए उन्हें सन् 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनका चिंतन ग्रंथ है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'अर्धनारीश्वर', 'मिट्टी की ओर' आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं। उनका कृतित्व गुणवत्ता और परिमाण दोनों दृष्टि से विपुल है।

प्रस्तुत खंण्डकाव्यांश में 'रश्मिरथी' महारथी कर्ण के करुण किन्तु भव्य जीवन की मीमांसा करनेवाला खण्डकाव्य है। सारे अन्यायों को सहकर कर्ण जन्मजात महानता पर पुरुषार्थजन्य महानता की विजय चाहता है। अंत में जब पाण्डवश्रेष्ठ के रूप में सब कुछ प्राप्त करने का प्रलोभन सामने आता है तब भी वह अविचलित रहता है और जिसने आज तक साथ दिया उस मित्र को किसी भी मोल पर छोड़ना नहीं चाहता। कृष्ण, कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में ले आने के लिए उससे मिलते हैं, उस कथाप्रसंग से प्रस्तुत काव्यांश लिया गया है।

वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
करतल से झरती रहे सदा,
निर्धन को भरती रहे सदा।

तुच्छ है, राज्य क्या है केशव? पाता क्या नर कर प्राप्त विभव?
चिन्ता प्रभूत, अत्यल्प हास, कुछ चाकचिक्य, कुछ क्षण विलास।
पर, वह भी यही गँवाना है,
कुछ साथ नहीं ले जाना है।

मुझ-से मनुष्य जो होते हैं, कंचन का भार न ढोते हैं,
पाते हैं धन बिखराने को, लाते हैं रतन लुटाने को।
जग से न कभी कुछ लेते हैं,
दान ही हृदय का देते हैं।

प्रासादों के कनकाभ शिखर, होते कबूतरों के ही घर,
महलों में गरुड़ न होता है, कंचन पर कभी न सोता है।
बसता वह कहीं पहाड़ों में,
शैलों की फटी दरारों में।

होकर समृद्धि-सुख के अधीन, मानव होता नित तपःक्षीण,
सत्ता, किरीट, मणिमय आसन, करते मनुष्य का तेज हरण।
नर विभव-हेतु ललचाता है,
पर, वही मनुज को खाता है।

चाँदनी, पुष्प-छाया में पल, नर गले बने सुमधुर, कोमल,
पर, अमृत क्लेश का पिये बिना, आतप, अंघड़ में जिये बिना;
वह पुरुष नहीं कहला सकता,
विघ्नों को नहीं हिला सकता।
उड़ते जो झंझावातों में, पीते जो वारि प्रपातों में,
सारा आकाश अयन जिनका, विषधर भुजंग भोजन जिनका;
वे ही फणिबंध छुड़ाते है,
धरती का हृदय जुड़ाते है।
मैं गरुड़, कृष्ण! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,
दुर्योधन पर है विपद घोर, सकता न किसी विष उसे छोड़।
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वैभव धन-दौलत **विलास** सुखोपभोग **चाह** इच्छा, अभिलाषा **परवाह** चिन्ता, व्यग्रता **निर्मल** पवित्र, शुद्ध **करतल** हथेली **निर्धन** धनरहित, कंगाल, दरिद्र **विभव** धन, संपत्ति, ऐश्वर्य **प्रभूत** अधिक, प्रचूर **अत्यल्प** बहुत थोडा **हास** निंदा, उपहास **चाकचिक्य** चमक, चकाचौंध **कंचन** सुवर्ण, सोना **प्रासाद** देवताओं या राजाओं का घर **कनकाभ** स्वर्णिम आभावाले **शैल** पर्वत, पहाड़, चट्टान **दरार** दरज, चीर, फूट **तपःक्षीण** निर्बल **किरीट** मुकुट **तेज** प्रभाव, कान्ति, चैतन्यात्मक ज्योति, चमक **कोमल** मृदुल, सुकुमार **क्लेश** दुःख, कष्ट, वेदना **अमृत** मुक्ति **आतप** धूप, उष्णता, गरमी **अंघड** आँधी **झंझावात** वर्षा सहित तीव्र आँधी **वारि** जल, पानी **प्रपात** पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा **अयन** गति, चाल, पथ, गमन **विष** गरल, ज़हर **भुजंग** सर्प **विपद** आपत्ति, संकट **धोर** भयंकर, विकराल **पाटना** ढेर लगा देना **अहिपाश** साँप का बंधन, फणिबंध

स्वाध्याय

1. **ऊँचे स्वर में पढ़िए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
   अत्यल्प, चाकचिक्य, कनकाभ, तपःक्षीण, क्लेश, झंझावात, फणिबंध
2. **संक्षेप में उत्तर दीजिए :**
   (1) विभव से क्या प्राप्त होता है?
   (2) धन-संपत्ति किस लिए है?
   (3) समृद्धि-सुख के अधीन मानव का क्या होता है?
   (4) फणिबंध कौन छुड़ाते हैं?
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :**
   (1) वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
   बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
   करतल से झरती रहे सदा,
   निर्धन को भरती रहे सदा।

(2) मैं गरुड़, कृष्ण ! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,
दुर्योधन पर है विपद धोर, सकता न किसी विध उसे छोड,
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

4. टिप्पणी लिखिए :

(1) कर्ण की अभिलाषा

(2) कर्ण का मित्रधर्म

5. विरोधी शब्द लिखिए :

निर्मल, निर्धन, प्रभूत, कोमल, अमृत

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक में से ढूँढकर उन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

सुखोपभोग, हथेली, प्रचूर, दरज, आँधी, पानी, गरल, चट्टान

प्र	भू	त	सं	त
क	द	अं	ध	ड
र	रा	वि	ला	स
त	र	नि	शै	वा
ल	वि	ष	ल	रि

7. अंदाज अपना-अपना : अपना मत स्पष्ट कीजिए :

(1) यदि कोई जरूरतमंद इन्सान आपसे मदद माँगे तो आप क्या करते ?

(2) आपको पता चले कि आपका दोस्त संकट में फँसा हुआ है तो आप क्या करेंगे ?

(3) आपके पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति है, तो क्या करोंगे ?

योग्यता-विस्तार

- **प्रकल्प कार्य (Project Work) :**
  छात्रों से निर्देशित विषय पर प्रकल्प कार्य करवाइए ।
  (1) भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाली व्यक्तियों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
  (2) प्रसिद्ध दानवीरों के जीवन-प्रसंगों का संकलन कीजिए।

●

5 स्वराज्य की नींव

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म मुज्फ्फरपुर जिले के मीरनपुर गाँव में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में और उच्च शिक्षा हिसार में प्राप्त की थी। कई वर्षों तक पंजाब सरकार की सेवा करने के बाद सन् 1974 से ये दिल्ली आ गए और तब से दिल्ली रहकर पूर्ण समय के लिए साहित्य सेवा में लगे हैं। आपने कहानी, उपन्यास, जीवनी, नाटक, एकांकी, संस्मरण और रेखाचित्र आदि विधाओं में पर्याप्त मात्रा में लिखा हैं। आपकी प्रमुख रचनाए 'ढ़लती रात', 'स्वप्नमयी' (उपन्यास), 'संघर्ष के बाद' (कहानी संग्रह), 'नव-प्रभात', 'डॉक्टर' (नाटक), 'प्रकाश और परछाईयाँ', 'बारह एकांकी', 'अशोक' (एकांकीसंग्रह), 'जाने-अनजाने' (संस्मरण और रेखाचित्र), 'आवारा मसीहा' (शरतचंद्र की जीवनी) आदि।

विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में प्रारंभ से ही स्वदेश प्रेम व राष्ट्रीय चेतना और समाज-सुधार का स्वर प्रमुख रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपने आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र में नाटक-निर्देशक के पद पर काम किया। बाद में स्वतंत्र लेखन को अपनी जीविका का साधन बना लिया। आपका समस्त साहित्य मानवीय अनुभूतियों से जुड़ा हुआ है। आपकी रचनाओं में रोचकता एवं संवेदनशीलता सर्वत्र व्याप्त है तथा भाषा सहज व सरल है।

प्रस्तुत एकांकी 'स्वराज्य की नींव' में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) में लक्ष्मीबाई के त्याग और संघर्ष का वर्णन किया गया है। स्वराज की नींव रखने में स्त्रियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत एकांकी के पात्र स्वराज्य की नींव के पथ्थर है; जिनके त्याग, तपस्या व बलिदान के द्वारा भले ही स्वराज्य प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन वे स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनकर जनमानस में देशप्रेम व नवजागरण की भावना जगाने में अपनी सार्थकता समझते हैं।

पात्र

लक्ष्मीबाई	**जूही**
मुंदर	**रघुनाथराव**
तात्या	**सेनानायक**

(रंगमंच पर युद्धभूमि का दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैंप कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तंबू का एक भाग दिखाई देता है। परदा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्ती के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

लक्ष्मीबाई : मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही! झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ गई परंतु मंज़िल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ, परंतु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। उसे पास करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही, उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं! सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है, लेकिन राव साहब हैं कि रक्तमंडल की छाया में ऐशो आराम में मशगूल हैं। (आवेश में आते-आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती है।) जूही, जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी लेकिन झाँसी हाथ से निकल गई जूही। (सहसा तीव्र होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? मैं अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

जूही : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी, आप तो गीता पढ़ती हैं। फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाई : मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने मुझसे क्या कहा था? ''जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।''

जूही : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना; स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनना। सफलता और असफलता दैव के

हाथ में है। लेकिन नींव के पथ्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाई : (मुस्कराकर) शाबाश मेरी कर्नल! तुम लोगों से मुझे यही आशा है। जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का दु:ख अवश्य है कि हमारे पास शक्ति है, फिर भी हम दुर्बल हैं। हमारे पास तात्या जैसे सेनापति हैं, फिर भी हमारी सेना में अनुशासन नहीं है। हमारे पास ग्वालियर का किला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों? जानती हो क्यों?

जूही : जानती हूँ महारानी! हम विलासिता में डूब गए है। (तभी मुस्कराती हुई मुंदर वहाँ प्रवेश करती है।)

मुंदर : कौन कहता है कि हम विलासिता में डूब गए हैं? विलासिता में डूबे हैं रावसाहब। बाँदा के नवाब, सेनापति तात्या।

जूही : (सहसा) नहीं, मुंदर। सेनापति नहीं।

मुंदर : (मुसकराती है) ओह, समझी। तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।

जूही : (दृढ़ स्वर में) मैं उसका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरदार तात्या राव साहब को अपने तन-मन का स्वामी मानते हैं।

मुंदर : और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।

जूही : हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ और मानती रहूँगी, लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ। देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ।

मुंदर : (सकपका कर) जूही तू तो नाराज़ हो गई। मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तूने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो तू उन्हें रोकती क्यों नहीं?

लक्ष्मीबाई : जूही ने उन्हें रोका है मुंदर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को आए थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।

जूही : हाँ रानी, मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूँ। बराबर नाचती रही हूँ, परंतु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फाँसी नहीं बना सकती हूँ। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं, उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।

लक्ष्मीबाई : (दीर्घ नि:श्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें कचोट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात ही क्या थी?

जूही : बाई साहब, मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।

मुंदर : और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो, हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।

लक्ष्मीबाई : नहीं मुंदर, नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकर ही उनको उस नींद से जगा सकती है।

जूही : दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?

लक्ष्मीबाई : हाँ जूही, दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती है। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरा नहीं उठेगी?

मुंदर : बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेगी। श्रीखंड और लड्डुओं पर जान देनेवाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर उठता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरंत उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

जूही : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेजी से प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई : क्या रघुनाथ?

रघुनाथराव : महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गई?

लक्ष्मीबाई : पेशवा की सेना हार गई, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का किला नहीं ले सकेगा।

रघुनाथ : मैं जानता हूँ, वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं।

जूही : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?

तात्या : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

लक्ष्मीबाई : (व्यंग्य से) इतने बड़े सेनापति को इस प्रकार एक नारी के सामने झुकते लज्जा नहीं आती? खैर, छोड़ो इस बात को। यह तुम्हारी विनम्रता है। लेकिन यह तोपों की आवाज़ कैसी आ रही है? कौन सा उत्सव मनाया जा रहा है? शायद चाटुकारों में जागीर बाँटना अभी खत्म नहीं हुआ है?

तात्या : बाई साहब, आपको हमें लज्जित करने का पूरा अधिकार है। हम इसी योग्य हैं, लेकिन जो कुछ हो रहा है, वह आप जानती ही हैं।

लक्ष्मीबाई : शायद ब्रह्मभोज के उपलक्ष्य में ये तोपें चल रही हैं। श्रीखंड और लड्डुओं के लिए घी शक्कर की कमी तो नहीं पडी।

जूही : सरकार इस बार इनको माफ़ कर दीजिए।

तात्या : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी?

लक्ष्मीबाई : तू कहती है, अच्छा। लेकिन (मुंदर का प्रवेश)

मुंदर : सरकार सेना तैयार है।

लक्ष्मीबाई : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही : सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई : लेकिन आज हमें देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बनाएँ, उसी पर चलूँगा।

लक्ष्मीबाई : तो जाओ, तलवार सँभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ राग-रंग। याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है।

तात्या : महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।

लक्ष्मीबाई : जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों को दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या : ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई : तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है, हमारी वीरता कलंकित न होने पाए।

तात्या : बाई साहब ! वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

लक्ष्मीबाई : प्रणाम तात्या ! मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है।)
मुंदर : सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।
जूही : और मैं तोपखाना सँभालूँगी।
लक्ष्मीबाई : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। हर-हर महादेव। (तीनों हर-हर महादेव का उद्‌घोष करती हैं। पृष्ठभूमि में यही उद्‌घोष उभरकर आता है, जो मंच पर प्रकाश के धुँधलाते न धुँधलाते सब कहीं छा जाता है। फिर धीरे-धीरे शांति छाने लगती है। प्रकाश उभरने लगता है और पृष्ठभूमि में गीतापाठ का स्वर उठता है।)

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रलय सृष्टि का विनाश **एशोआराम** विलासप्रियता **प्रतिज्ञा** प्रण **दुत्कारना** धिक्कारना **स्वराज्य** अपना राज्य **व्यग्र** आतुर **राग-रंग** गाना-बजाना **रणभूमि** लड़ाई का मैदान **अंकित** निशान लगा हुआ **उत्तेजित** भड़का हुआ

मुहावरे

अड़ जाना किसी बात को मनवाने की जिद करना **थपेड़े मारना** समस्याओं का तेजी से उभरना **हाथ से निकल जाना** अपने बस में न रहना **भूमि तैयार करना** आधार बनाना, भूमिका बनाना **नींव का पथ्थर बनना** किसी खास कार्य की शुरूआत करना **नींद हराम करना** गहरी चिंता में डाल देना **पाताल से खींच लाना** किसी इच्छित चीज को कहीं से ढूँढ लाना **आँखें खुलना** सजग होना **मौत से जूझना** साहस से मौत का सामना करना

स्वाध्याय

1. **एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**
   (1) रानी लक्ष्मीबाई की चिंता का कारण क्या था?
   (2) बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?
   (3) रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?
   (4) जूही सेनापति तात्या का पक्ष क्यों लेती है?
   (5) तात्या रानी लक्ष्मीबाई के सामने लज्जित क्यों हो उठे?
2. **पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**
   (1) मार्ग में हिमालय अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?
   (2) रानी लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्‌भूत मिसाल थीं- समजाइए।
   (3) 'स्वराज्य की नींव' शीर्षक कहाँ तक सार्थक है? प्रस्तुत एकांकी के लिए कोई अन्य शीर्षक दीजिए।
   (4) प्रस्तुत एकांकी में से उन कथनों को छाँटिए जिससे पता चलता है कि युद्ध की छाया में भी राव साहब वैभव विलास में डूबे थे?
3. **आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) ''स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनना।''
   (2) ''शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेंगी।''
   (3) ''दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और चौड़ा कर देती हैं?''

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) वह मिल सकता है, केवल सेवा, तपस्या और .... से। (बलिदान/युद्ध)

(2) महासागर की डरावनी .... थपेड़े मारने लगती हैं। (लहरें/हवाएँ)

(3) कौन कहता है कि .... में डूब गए हैं? (विलासिता/तपस्या)

(4) मैं .... के लिए नाच सकती हूँ। (विजय/स्वराज्य)

(5) हमारी .... कलंकित न होने पाए। (श्रेष्ठता/वीरता)

5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द :

धरती और आकाश के मिलने का स्थान क्षितिज **निराशा या क्रोध में मुँह से निकलने वाली श्वास** नि:श्वास **दहीं से बननेवाला एक व्यंजन** श्रीखंड **ब्राह्मणों को खिलाया जानेवाला भोज** ब्रह्मभोज **स्वामि के प्रति श्रद्धा रखनेवाला** स्वामिभक्त

6. उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :

राज्य - स्व+राज्य = स्वराज्य

देश, भाव, तंत्र, जन

7. उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :

सुन्दर - सुन्दरता - सौंदर्य

शूर - शूरता

धीर - धीरता

उदार - उदारता

स्थिर - स्थिरता

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले किसी एक स्वतंत्रता सेनानी के जीवन पर दस पंक्तियाँ लिखिए।
- उन देशभक्त नारियों के नाम लिखिए जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- देश की आज़ादी के लिए शहीद होनेवाले किसी दो शहीदवीरों की फिल्म वर्गखंड में प्रस्तुत करें।

●

अशुद्ध और शुद्ध वाक्य

भाषा के वर्ण, शब्द तथा वाक्य आदि के प्रत्येक स्तर पर कुछ ऐसे निश्चित नियम होते हैं जिनसे भाषा का मानक स्वरूप बनता है। जो प्रयोग मानक स्वरूप से भिन्न है वह अशुद्धि है। वाक्यरचना की अशुद्धियों का मुख्य कारण होता है व्याकरणिक नियमों का सही रूप में न जानना। अत: हमें बोलने या लिखने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ कहा या लिखा जाए, वह बिलकुल स्पष्ट, सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

यहाँ हम शुद्ध वाक्यरचना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करेंगे।

पदक्रम संबंधी नियम :

वाक्य में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न पदों को एक सुनिश्चित क्रम में रखने से वाक्य-रचना शुद्ध होती है। हिन्दी में पदक्रम संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

(1) वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म तथा अंत में क्रिया आते हैं। उदा.: जितेन्द्र क्रिकेट खेलता है।

(2) कर्ता और कर्म को छोड़कर शेष कारक प्राय: कर्ता और कर्म के बीच स्थित होते हैं।

उदाहरण - माँ अपने पुत्रों के लिए खाना बनाती हैं। (सम्प्रदान)
- माताजी चाकू से फल काटती है। (करण)
- पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान)
- लड़के मैदान में क्रिकेट खेलते हैं। (अधिकरण)

कुछ स्थलों पर ये कारक कर्म के बाद भी प्रयुक्त हो जाते हैं। जैसे-
- प्रियंदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखा।

(3) प्रश्नवाचक पद प्रश्न के विषय से ठीक पहले प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - अपराधी का पता चला?
- क्यों यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा है?
- आप को न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार है?

(4) क्रियाविशेषण सदैव क्रिया के पूर्व आते हैं।

उदाहरण - मोहन धीरे-धीरे चल रहा है।
- श्याम तेज़ी से दौड़ रहा था।

(5) वाक्य के विभिन्न पदों के बीच तर्कसंगति होनी चाहिए।

उदाहरण - छात्रों ने गुरुजी को एक फूलों की माला पहनाई । (अशुद्ध वाक्य)
छात्रों ने गुरुजी को फूलों की एक माला पहनाई । (शुद्ध वाक्य)
- यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है। (अशुद्ध वाक्य)
गाय का शुद्ध दूध यहाँ मिलता है। (शुद्ध वाक्य)

(6) 'न' या 'नहीं' का नकारात्मक अर्थ में प्रयोग क्रिया से पहले होता है।

उदाहरण - शिक्षक महोदय घर पर नहीं मिलेंगे।
- शिष्य क्षमा नहीं माँगेगा।

(7) आग्रह के लिए 'न' अव्यय का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है।

उदाहरण - चलोगे न ।
- तुम भी जाओ न।

अन्वय संबंधी नियम :

'अन्वय' अर्थात् 'मेल' या 'अनुरूपता'। वाक्यों के पदों की क्रिया का उसके लिंग, वचन, काल और पुरुष के अनुरूप होना 'अन्वय' कहलाता है। अन्वय संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

(1) जब कर्ता और कर्म विभक्ति सहित होते हैं तो क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
1. माँ ने लड़की को **बुलाई**	1. माँ ने लड़की को **बुलाया।**
2. क्या आपने मीना को **पहचानी?**	2. क्या आपने मीना को **पहचाना?**

(2) भिन्न-भिन्न लिंगों की दो या अधिक व्यक्तिवाचक या जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आयें तो क्रिया अक्सर पुल्लिंग बहुवचन में आती है।

उदाहरण :

- राम, लक्ष्मण और जानकी वन में गये।
- गाय और बैल चर रहे हैं।
- राजा और रानी नगर में गये।
- जंगल में भालू, शेर और लोमड़ी रहते हैं।

(3) यदि कर्ता का लिंग अज्ञात हो तो क्रिया पुल्लिंग में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण : तुम्हारा खर्चा कौन चलाता है?

(4) आदरार्थक एकवचन कर्ता के लिए क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण : गाँधीजी महान नेता थे।

(5) आँसू, दर्शन, दाम, प्राण, लक्षण, समाचार, हस्ताक्षर, होश, ओठ, बूँद, लोग आदि शब्दों के साथ क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण :

- उसके आँसू रुकते ही नहीं।
- मेरे प्राण संकट में आ गये।
- विवाह के शुभ समाचार मिले।
- लोग तो बात बनाते रहते हैं।

(6) प्रत्येक, हरएक, एक एक आदि शब्दों के साथ आनेवाले संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- क्लास में प्रत्येक लड़के उत्तीर्ण होंगे।	- क्लास में प्रत्येक लड़का उत्तीर्ण होगा।
- हरएक मजदूर अफ़सर से मिलें।	- हरएक मजदूर अफ़सर से मिले।
- आपके भाषण के एक एक शब्द तुले हुए थे।	- आपके भाषण का एक-एक शब्द तुला हुआ था।

(7) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- तुम्हारी स्कूल कहाँ है?	- तुम्हारा स्कूल कहाँ है?

गलत	सही
– यह <u>मेरी</u> कॉलिज है।	– यह <u>मेरा</u> कॉलिज है।
– <u>उसका</u> देह दुर्बल है।	– <u>उसकी</u> देह दुर्बल है।
– <u>उनका</u> आवाज़ कोमल है।	– <u>उनकी</u> आवाज़ कोमल है।

(8) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– आज मौसम <u>सुहावनी</u> है।	– आज मौसम <u>सुहावना</u> है।
– आजकल कपास <u>महँगा</u> है।	– आजकल कपास <u>महँगी</u> है।
– <u>उसका</u> नाक <u>लम्बा</u> है।	– <u>उसकी</u> नाक <u>लम्बी</u> है।
– पीतल <u>पीली</u> होती है।	– पीतल <u>पीला</u> होता है।

(9) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– <u>मेरी</u> आम <u>सड़ी हुई है</u>।	– <u>मेरा</u> आम <u>सड़ा हुआ है</u>।
– तुमने झूठ क्यों <u>बोली</u>?	– तुमने झूठ क्यों <u>बोला</u>?
– आत्मा नहीं <u>मरता</u>।	– आत्मा नहीं <u>मरती</u>।
– बर्फ एक रुपये किलो <u>बिकता</u> है।	– बर्फ एक रुपये किलो <u>बिकती</u> है।

(10) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही संबंध विभक्ति (का, की) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– <u>परमात्मा का</u> महिमा अपार है।	– <u>परमात्मा की</u> महिमा अपार है।
– <u>बंबई की</u> बाज़ार अच्छी है।	– <u>बंबई का</u> बाज़ार अच्छा है।
– उसमें मुकाबला <u>करने का</u> सामर्थ्य नहीं है।	– उसमें मुकाबला <u>करने की</u> सामर्थ्य नहीं है।
– मुझे <u>केवड़े की</u> शरबत पसंद है।	– मुझे <u>केवड़े का</u> शरबत पसंद है।

अन्य नियम :

(1) विभक्ति संबंधी नियम :

(क) विभक्ति लगाने पर – यह, ये, वह, वे, कौन, जो, कोई... सर्वनाम के रूप बदल जाते हैं। जैसे–

विभक्ति-रहित रूप	**विभक्ति लगने पर रूप**
यह	इस
ये	इन
वह	उस
वे	उन
कौन	किस, किन
जो	जिस, जिन
कोई	किस, किन

उदाहरण :

गलत	सही
– यह घर में कौन रहता है?	– इस घर में कौन रहता है?
– ये लोगों में एकता नहीं है।	– इन लोगों में एकता नहीं है।
– वह आदमी को दौलत का घमंड है।	– उस आदमी को दौलत का घमंड है।
– वे लोगों को अनाज़ चाहिए।	– उन लोगों को अनाज चाहिए।
– आप कौन को बुलाते हैं?	– आप किसको (किसे) बुलाते हैं?
– ये थैलियाँ कौन की हैं?	– ये थैलियाँ किन की हैं?
– जोको पुकारूँ वहीं आवे।	– जिसको पुकारूँ वही आये।
– जो लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ।	– जिन लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ।
– कोई का पेन यहाँ रह गया।	– किसीका पेन यहाँ रह गया।

(ख) संज्ञा में प्रत्यय अलग से और सर्वनाम में प्रत्यय साथ में लिखा जाता है।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के बाद उसी व्यक्ति का यदि फिर से निर्देश करना हो तो 'अपना', 'अपनी' अपने आदि सर्वनामों का प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण :

गलत	सही
– मैं मेरा काम करता हूँ।	– मैं अपना काम करता हूँ।
– वे उनकी धून में मस्त हैं।	– वे अपनी धून में मस्त हैं।
– तुम तुम्हारे घर जाओ।	– तुम अपने घर जाओ।

(2) शब्दों का उचित प्रयोग :

(1) शब्द के अर्थ के संबंध में शब्द का वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक है।

– हमें अपने माता-पिता की शुश्रूषा करनी चाहिए । (गलत)

– हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए । (सही)

– 'शुश्रूषा' रोगी की की जाती है। माता-पिता एवं श्रेष्ठ जनों के लिए 'सेवा' शब्द का प्रयोग होना चाहिए।

– इस समय उनकी आयु 70 वर्ष है। (गलत)

इस समय उनकी उम्र 70 वर्ष है। (सही)

– 'आयु' जीवन की पूरी गणना को कहते हैं।

– तलवार एक उपयोगी अस्त्र है। (गलत)

तलवार एक उपयोगी शस्त्र है। (सही)

– 'अस्त्र' हाथ से फेंककर चलाया जानेवाला हथियार है; जबकि 'तलवार' हाथ में रखकर चलाई जाती है।

(2) दो बलाघातों का लगातार प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जैसे : – इसे बावजूद भी वह आता-जाता रहा। (गलत)

– इसके बावजूद वह आता-जाता रहा। (सही)

(3) शब्द का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- एक ही भाव को दो बार कहने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

उदाहरण :

(1) मात्र केवल छात्रों के लिए। (अशुद्ध)
केवल छात्रों के लिए (अथवा) मात्र छात्रों के लिए (शुद्ध)

(2) आपका भवदीय (अशुद्ध)
आपका (अथवा) भवदीय (शुद्ध)

- मुहावरे का गलत रूप से प्रयोग करने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

उदाहरण :

(1) उसके मुँह से फूल गिरते हैं। (अशुद्ध)
उसके मुँह से फूल झड़ते हैं। (शुद्ध)

(2) सर्व को दूध खिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (अशुद्ध)
सर्व को दूध पिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (शुद्ध)

- अपने नाम के साथ 'श्री' शब्द को छोड़कर वाक्य लिखना चाहिए।

उदाहरण :

(1) मेरा नाम श्री महेशभाई है। (गलत)
मेरा नाम महेशभाई है। (सही)

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :**

(1) घर आता है वह आदमी।
(2) आज वहाँ मीना ने जाना है।
(3) वह बुद्धिमान स्त्री है।
(4) वृक्षों पर कोयल बोल रही है।
(5) उसे कितना आम चाहिए।
(6) बेटी तो पराया धन होता है न?
(7) सविता ने चंद्रिका को बुलायी।
(8) यह घर में कौन रहता है?
(9) रघुवीर को एक लड़की हुई है।
(10) मेरा नाम श्री मनोजकुमार है।
(11) आप यहाँ बैठो।
(12) वह बड़ा चालाक है।
(13) यद्यपि वह निर्धन है परंतु ईमानदार है।
(14) जो करेगा वह भरेगा।
(15) पुलिस के आते ही चोर दुम उठाकर भाग गया।

●

6 मेरी बीमारी श्यामा ने ली

हरिवंशराय बच्चन

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 2003 ई.)

हिन्दी साहित्य में हरिवंशराय बच्चन का नाम उनकी एकमात्र कृति से ही अमर हो गया। हालाँ कि विपुल मात्रा में साहित्यसर्जन किया है। छायावादोत्तर काल के कवियों में 'बच्चन' एक विशिष्ठ सर्जक रहे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में, तत्पश्चात् दिल्ली में सरकारी सेवा, आकाशवाणी और दो-एक अन्य स्थलों पर आपने सेवाएँ दी।

भारत के एक विशिष्ट कवि के रूप में राष्ट्रपतिजी ने उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत्त किया था। प्रारंभिक नौकरी पायोनियर प्रेस में की थी।

'मधुशाला' के कवि के रूप में बच्चनजी को इतनी शोहरत मिली कि उनकी मधुशाला का सभा -सम्मेलनों, कवि-गोष्ठि आदि में होता था। लोग बड़ी संख्या में उमड़ते थे।

केम्ब्रिज युनि. से जोहन पेट्स नामक कवि के समग्र वाङमय पर आपने पीएच.डी. की है। केन्द्रीय मंत्रालय दिल्ली में आपने हिन्दी-विशेषज्ञ के रूप में अप्रतिम कार्य किया है। आपको कई पुरस्कार जैसे 'सोवियत लेन्ड पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्म विभूषण' आदि प्राप्त हुए है।

'तीर पर कैसे रूकूँ मैं आज, लहरों का निमंत्रण।'

और

'इस पार प्रिये तुम हो - मधू है, उस पार न जाने क्या होगा?'

जैसी काव्य-पंक्तियाँ आज भी लोगों की जबान पर है।

मधुशाला, निशा-निमंत्रण, सप्त रंगिनी, मिलन-यामिनी, आकुल अंतर और एकांत संगीत नामक इनके सुप्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं तो 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' और 'दश द्वार से सोपान तक' शीर्षक सें चार खंड़ो में लिखी आपकी आत्मकथा है। 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' आत्मकथांश है। जो 'क्या- भूलूँ क्या याद करूँ?' में से लिया गया है। बच्चनजी की प्रथम पत्नी का नाम श्यामा था, जो सही अर्थ में एक आदर्श जीवनसंगिनी थी। श्यामा की बीमारी, उसकी खुद की न होकर बच्चनजी की थी। जो सेवा करते करते ले ली गयी थी।' बच्चनजी का यह मंतव्य श्यामा की पति-भक्ति, कर्तव्य-परायणता और निष्ठा का प्रतीक है।

प्रस्तुत आत्मकथांश में श्यामा की बीमारी का दर्दनाक और कारुण्य-सभर निरुपण मिलता है, तो दूसरी ओर कवि की भावुकता और संवेदनशीलता का प्रगटीकरण मिलता है। (''क्या भूलूँ क्या याद करूँ'' श्री हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा है। हिन्दी के इस सुप्रसिद्ध कवि ने अपने संस्मरण बड़े ही रोचक ढंग से आलेखित किये हैं। कवि अपने जीवन की घटनाओं के साथ उस युग का चित्र भी दे देता है। प्रस्तुत अंश ''क्या भूलूँ क्या याद करूँ'' से लिया गया है। इसका यह शीर्षक- 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' विषयवस्तु का भी निर्देश करता है।)

मैं अपनी बीमारी को दुलरानेवालों में न था। सच कहूँ तो मैं अपनी बीमारियों के प्रति प्राय: निर्भय था। शायद मैंने गांधीजी के ही लेख में कहीं पढ़ा था कि बीमार होना अपराध है। हमें जो शरीर दिया गया है उसे हम स्वस्थ न रखें तो हम अपराधी तो हैं हीं। मैं इस तर्क को कुछ और आगे ले गया था। अपराधी को दंड़ देना चाहिए। मुझे जब कभी छोटी-मोटी बीमारी होती, जुकाम, बुखार, खाँसी, सिरदर्द तो मैं खाट पर न लेटता; और भी अपने से काम लेता। मुझे भरे-भुट्ट बुखार में अपनी रात की ट्यूशनों पर जाने की याद है। बुखार की गर्मी और तेज़ी में तो मैं और जोश से पढ़ाता-मज़दूरी करके रोटी कमानेवाले को बीमार पड़ने का क्या अधिकार है, बीमारी अमीरों की हरमजदगी है, गरीबों को उसे अपने पीछे न लगाना चाहिए- लिखने में तो ऊँचा बुखार मुझे सब तरह से सहायक, प्रेरक और प्रोत्साहक लगता; एक तरह की आग, जिससे मेरी अनुभूतियों में ताप आता, जिसमें गल-पिघलकर मेरा हृदय ढलता; एक तरह की भट्ठी जो मेरे विचार, भाव, कल्पनाओं को उबाल देकर उच्छलित करती। यह तो मैं नहीं कहूँगा कि बुखार में मैं अदबदा कर लिखता था, पर अगर मैं लिखना चाहता था तो बुखार मेरे लिए कोई बाधा नहीं बन सकता था। हल्के बुखार में तो मेरे सब काम हस्बमामूल होते रहते थे। कोई मेरा बदन छूकर कभी कहता था कि तुम्हें तो बुखार है तो मैं पट से जवाब देता था कि हाँ, बुखार है और मैं भी हूँ। शायद किपलिंग ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि कभी-कभी उसे बुखार में भी काम करना पड़ता था और जब वह बुखार में होता था तो और अच्छी कहानियाँ लिखता था। बुखार में कम लिखने की मुझे याद नहीं, वह कैसा बन पड़ा, इसका निर्णय मैं न देना चाहूँगा; प्रसंगवश मुझे याद आ गया है कि अपनी 'दो चट्टानें' की दो

सबसे बडी कविताएँ सार्त्र के नोबल पुरस्कार ठुकरा देने पर और 'दो चट्टान'अथवा 'सिसिफ़स बरक्स हनुमान' मैंने प्लूरिसी में पड़े-पड़े लिखीं थीं। बहरहाल, जब मैं अपनी जवानी पर था, बीमारी मुझे पराजित न करती थी, मैं ही अपनी ज़िद से बीमारी को पराजित कर देता था- बुखार-सुखार आखिर कितने दिन चलता। विश्राम तिवारी कहा करते थे, ''मार के पीछे भूत भागै।'' मैंने अपने प्रयोग से सिद्ध किया था, ''काम के पीछे बुखार भागै।''

यह बुखार मामूली न था। इसका संबंध उस तूफ़ान से था जो पिछले नौ महीनों से मुझे झकझोर रहा था और जो शांत होने से पूर्व सबसे अधिक विध्वंसक झटका मुझको दे गया था। स्कूल बंद था। ट्यूशनों पर मैं जाता था। उनकी आमदनी की मुझे जरूरत थी। किताबों की बिक्री अभी नियमित नहीं थी। क़र्ज सिर पर चढ़े थे। बुखार दस दिन चला, बीस दिन चला, महीनेभर चला, दो महीने चला, जुलाई आ गई। अब बुखार के साथ ट्यूशन पर ही जाना न होता, दिनभर स्कूल में पढ़ाना भी पड़ता। बुखार का नमूना वही, सुबह बिलकुल नहीं, शाम को 101^0- 102^0 के बीच। कमज़ोरी दिन-दिन बढ़ती हुई, कभी-कभी धीमी खाँसी। दवा, शौकिया दवाबाँटू एक होमियोपैथ कर रहा था। कभी-कभी सोचता, क्या मुझे तपेदिक हो गया है? हो गया हो तो एलोपैथी का इलाज तो अपने बूते के बाहर है। क्या उस समय मेरी जिए्वा पर सरस्वती बैठी थी जब मैंने कहा था कि श्यामा का बुखार मैं लेने जा रहा हूँ? बैठी हों तो कितना अच्छा है! क्या मैं बीमार हूँ इसलिए श्यामा स्वस्थ है जिसने पिछले छह वर्षों से इन महीनों में ज्वर-मुक्ति नहीं जानी है? पर श्यामा को मेरी बीमारी भीतर ही भीतर खाये जा रही थी, उसने अपने इच्छाबल से जैसे अपने को स्वस्थ कर लिया था कि वह भी कहीं मेरी चिंता न बन जाए। उसके अतिरिक्त मेरी बीमारी का शायद किसी को पता भी न था, क्योंकि सारे काम तो मैं सामान्य रूप से किये ही जाता था; गर्मी में तो सभी थोड़े-बहुत दुबले हो जाते हैं। एक दिन उसने मुझसे कहा कि मैं डॉ. बी.के. मुखर्जी से अपनी परीक्षा कराऊँ। मैंने टालमटूल की तो उसने ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया, मैं जब तक अपने को डाक्टर को न दिखलाऊँगा वह खाना नहीं खाएगी। ब्रह्मास्त्र तो मानना ही था। डॉ. मुखर्जी को भय था कि मुझ पर क्षय का आक्रमण हुआ है। नुस्खा उन्होंने लिख दिया और कुछ दिन चिंतामुक्त होकर पूरी तरह आराम करने को कहा। नुस्खा मुझे मौत का परवाना लगा- क्या मेरी बिदा का समय आ गया? - क्या इतने ही दिनों के लिए आया था? इतना ही गाने, गुनगुनाने, केवल इतना श्रम-संघर्ष करने, इतने दुःख-संकट उठाने?- 'स्वागत के ही साथ विदा की होती देखी तैयारी, बंद लगी होने खुलते ही मेरी जीवन-मधुशाला।' क्या मैंने अपनी भविष्यवाणी स्वयं कर दी थी? सबसे मर्मवेधी प्रश्न था- क्या श्यामा के भाग्य में वैधव्य भी लिखा है?

मरने से मुझे डर नहीं था; वह मुझे कठिन भी नहीं लगा; कठिन लगा मरने के पहले जीना। पूरे आराम के अर्थ होंगे ट्यूशनें छोड़ दूं, स्कूल से छुट्टी ले लूँ- ज्यादा लूं तो बगैर तनख़्वाह के लेने को तैयार हूँ, फिर घर का खर्च कैसे चलेगा, शालिग्राम केवल अपनी तनख़वाह के बल पर घर नहीं चला सकते; कल उनकी बदली हो सकती है, तब वे एक पैसा भी घर भेजने की स्थिति में न होंगे; महँगी-महँगी दवाएँ कहाँ से आएँगी, किताबों से आमदनी अनियमित और अनिश्चित है, क़र्ज भी अदा करने को कम नहीं है।

श्यामा ने मेरी बीमारी सुनी तो काँप उठी, पर तुरत सँभल भी गई, दृढ़ भी हो गई, जैसे उसने पलभर में अनुभव कर लिया कि उसका काँपना मैं सहन नहीं कर सकूँगा।

इस खबर से मेरे माता-पिता को तो लकवा-सा मार गया। पिताजी धैर्यवान् व्यक्ति थे, उन्होंने मुझसे कहा, ''घबराओ नहीं, हम घर बैचकर तुम्हारा इलाज करेंगे।''

शालिग्राम असमर्थता की एक उसाँस लेकर रह गये।

मैंने कुछ दिनों के लिए ट्यूशन और स्कूल से छुट्टी ले ली। किताबों की बिक्री से कुछ रुपये पड़े थे, उनसे दवाएँ मँगा लीं और चारपाई पर लेट गया। श्यामा की सेवा साकार हो गई।

डाक्टर ने निश्चिंत होकर आराम लेने के लिए कहा था। जब बहुत कुछ करने को रहता था चिंता के लिए समय ही कहाँ था, अब तो चिंता ही चिंता करने को थी। विशेष चिंता भी मुझे सिर पर चढ़े क़र्ज की। मेरा इलाज हो या न हो, पर क़र्ज की किस्तें तो जानी ही चाहिए, उसकी नियमित अदायगी के साथ मेरी साख जुड़ी थी, उसका जाना मेरे मरने से पहले ही मेरी मौत होगी।

श्यामा के लिए मैं पारदर्शी दर्पण था। उसने पूछा, ''किसी बात से चिंतित हो? चिंता ही खाती रहेगी तो दवा क्या लाभ पहुँचाएगी?''

मैंने कहा, ''ट्रैक्ट सोसायटी के मुझ पर 400, (क़र्ज हैं, करीब 100) अन्य मित्रों के।''

उसने जो उत्तर दिया उससे मैं चौंक पड़ा और सहसा उठकर उसे घूरकर देखने लगा, जैसे श्यामा को एक बार फिर से पहचानने की जरूरत हो।

उसने कहा था, ''क़र्ज तो मैं तुम्हारे मरने के बाद भी उतार दूँगी। तुम इसकी चिंता छोड़ो।''

मैं सोचने लगा, श्यामा ने वज्र ही अपनी छाती पर रखकर यह वाक्य कहा होगा। मुझे चिंतामुक्त रखने को वह क्या नहीं कर सकती थी।

मरने के लिए जो मैंने अपने आप को छोड़ दिया था, वह मुझे एकदम गलत लगा। मुझे अपने लिए नहीं तो श्यामा के लिए जीने का संघर्ष करना चाहिए। श्यामा के लिए मैंने जीवन में कुछ नहीं किया, कभी करने के योग्य नहीं रहा। अब यदि मैं उसे ऐसी स्थिति में छोड़ जाऊँ कि वह मेरे मरने पर मेरा क़र्ज उतारने की चिंता करे तो मुझ-सा जघन्य अपराधी कौन होगा! नहीं, मैं श्यामा के लिए चिंताएँ नहीं छोड़ जाऊँगा, जीने का रास्ता खोजूँगा, जीकर अपनी चिंताएँ समाप्त करूँगा। एक रात जैसे मेरे कानों में किसी ने कहा, ''एक रास्ता अब भी है।''

पंद्रह दिन के ही इलाज में अपना बटुआ खाली हो गया था। मैं कदापि नहीं चाहता था कि पिताजी घर को हाथ लगाएँ । अपनी वृद्धावस्था में शांति से बैठने को- चाहे उनको भूखे-नंगे ही बैठना पड़े- उन्होंने एक शरणस्थल बनाया था। मैं उससे उन्हें वंचित करने का कारण नहीं बनना चाहता था। पर यह भी नियति का एक व्यंग्य है कि मेरे पिता-माता, दोनों में से किसी को अपनी छत के नीचे अपनी अंतिम श्वासें छोड़ने का योग नहीं बना था- 'ना जाने राम कहाँ लागै माटी।' पर उस समय मैं कैसे जानता।

और एक दिन मुझे वह रास्ता दिखाई दिया, जिस पर अपने बल पर चलकर मैं अपनी चिंताएँ समाप्त कर सकता था। किसी के लिए, विशेषकर श्यामा के लिए, मैं कोई चिंताएँ नहीं छोडूंगा। इस संकल्प ने मुझे दृष्टि भी दी, बल भी दिया।

मैंने डॉ. बी. के. मुखर्जी के पास जाकर कहा, ''डाक्टर साहब, आप का इलाज बहुत महँगा है, मेरे पास आपके इलाज के लिए पैसे नहीं...''

इसके पूर्व कि मैं कुछ और कहूँ या पूछूँ उन्होंने अपने बदनाम मुँहफट स्वभाव से कहा, ''पैसे नहीं है तो जाओ मरो!''

मुझे जीवन में चुनौती से ही बल मिलता है। वे यदि मुझे सौ बरस जीने का आशीर्वाद भी देते तो शायद जीने के लिए संघर्ष करने का मुझमें इतना बल न आता जितना मैंने उनके 'जाओ मरो,' शब्दों से संचय किया।

लड़कपन में मेरे पड़ोसी बाबू मुक्ता प्रसाद ने लुई कूने के पानी के इलाज से मुझे परिचित कराया था। मेरी ऐसी बीमारी के लिए ठंडे पानी के टब में बैठकर 'सिट्ज बाथ' लेने का विधान था। एलोपैथी में क्षय के रोगी को दूध, घी, मक्खन, अण्डा अधिक से अधिक दिया जाता था। कूने के इलाज में चिकना मना था, सिर्फ कच्ची सब्जियाँ, फल, भीगे चने, गेहूँ आदि पर रहना था। न दवा पर कुछ खर्च, न खुराक पर कुछ खर्च- यही इलाज तो मेरी स्थिति के अनुकूल था और काम-काज साधारण किये जाना था। मैंने बी.के. मुखर्जी का नुस्खा फाड़ डाला और कूने के अनुसार सिट्ज बाथ आरंभ किया, तद्नुसार खुराक आदि रखी। स्कूल भी जाने लगा, केवल रातवाली ट्यूशन छोड़ दी। उसका मोआवज़ा एक तरह से किताबों की बिक्री से मिल जाता। श्यामा ने मेरा विरोध न किया। जीवनभर मैं जिस रास्ते पर भी चला उसने 'स्वस्ति पंथा' कहा और मेरे पीछे चली। मेरी स्नान-चिकित्सा के संबंध में भी वह प्रतिदिन अपनी सेवा, सहयोग देती रही, सबसे अधिक अपने इच्छा-बल से उसने मुझे अपने रास्ते पर न ठहरने दिया, न पीछे फिरने दिया- 'राह पकड़ तू एक चलाचल पा जाएगा मधुशाला'। लेकिन अपने अड़िग इच्छा-बल से उसने जो सबसे बड़ा सहयोग दिया और जो सबसे बड़ा चमत्कार किया वह यह था कि जितने दिन मेरा इलाज चलता रहा उसने अपने सारे रोगों को जैसे कील दिया और कभी एक उँगली दु:खने की भी शिकायत

न की। शायद उसके प्रति इस निश्चिंतता ने मुझे अपने रोग से लड़ने का जितना बल दिया उतना किसी चीज ने नहीं। इस आत्म-नियंत्रण, आत्मनिग्रह, इच्छाबल, हठयोग की - समझ में नहीं आता उसे क्या नाम दूँ- बड़ी महँगी क़ीमत उसे चुकानी पड़ी। अपने क्षय-ज्वर से पूर्णतया मुक्त हो जिस दिन मैंने सामान्य भोजन किया- 15 अप्रैल, 1936 को- ठीक उसी दिन वह चारपाई पर गिरी और फिर न उठी; 216 दिन बराबर रोग-शय्या पर पड़े रहने के बाद 17 नवम्बर, 1936 को उसने अपना शरीर छोड़ दिया। श्यामा के और अपने विवाहित जीवन के अंतिम अठारह महीनों में मुझे और उसे, दोनों को मौत के साथ संघर्ष करना पड़ा। मेरे संघर्ष में श्यामा ने अपनी इतनी आंतरिक मंगल कामना दी; इतना सहयोग दिया, इतनी अपनी सेवा दी, इतना अपने को दिया, इतना अपनी ओर से मुझे चिंता-विमुक्त रखा कि मैं उस संघर्ष में विजयी हुआ, पर उसके संघर्ष में बहुत मैंने अपनी शुभकामना दी, बहुत सहयोग दिया, बहुत सेवा दी, बहुत अपने को दिया पर वह पराजित हो गई, संभवत: एक मोर्चे की कमज़ोरी से, वह मेरे विषय में मृत्यु की अंतिम साँसों तक चिंता-विमुक्त नहीं हो सकी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्लूरिसी दांतों की बीमारी, फेफड़ों में पानी भर जाना **टाल मटुल** टालना **अदायगी** देना, प्रदान करना **नुस्खा** उपाय **आत्मनिग्रह** आत्मा पर अंकुश **एलोपैथी** अंग्रेजी पद्धति की अचार पद्धति **नेचरोपथी** प्राकृतिक उपचार पद्धति

स्वाध्याय

1. **एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) सामान्यत: लेखक कौ कौन-कोन सी बीमारियाँ रहती थीं?
   (2) लेखक एलोपैथी का उपचार क्यों नहीं कराते थे?
   (3) बच्चनजी को मुक्ता प्रसादजी ने कौन सा उपचार बताया था?
2. **सविस्तर उत्तर दीजिए :**
   (1) लेखक बीमारी में भी क्यों काम करते थे?
   (2) लेखक की बीमारी सुनकर श्यामा काँपकर तुरंत क्यों संभल गई?
   (3) लेखक को ऐसा क्यों लगा की उन्हें श्यामा के लिए जीने का संघर्ष करना चाहिए?
   (4) बच्चनजी की पारिवारिक आर्थिक विपन्नता के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. **नीचे दीये गये वाक्यों का भावार्थ समझाइए :**
   (1) 'बीमारी अमीरों की हरमजदगी है, गरीबों को उसे अपने पीछे न लगाना चाहिए।'
   (2) 'काम के पीछे बुखार भागे।'
4. **शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :**
   (1) जहाँ शरण लिया जा सके
   (2) सौ-बरस जीने का आशीर्वाद
   (3) शुभ मार्ग पर चलने का आशीर्वाद
5. **विरोधी शब्द दीजिए :**
   चिकना, मधु, कलश, विमुक्त

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- बीमारी का इलाज करते बच्चन का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- हरिवंशराय बच्चन की प्रख्यात रचना 'मधुशाला' का कैसेट बच्चों को सुनाइये।
  हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा का एक अंश कैसेट द्वारा सुनाइये।

●

7 सूरदास के पद

सूरदास

(जन्म : सन् 1478 ई. : निधन : सन् 1573 ई.)

महाकवि सूरदासजी का जन्म कुछ लोगों के मतानुसार दिल्ली के पास सीही नामक गाँव में हुआ था। कई लोगों का मानना है कि इनका जन्म मथुरा के पास रुकना या रेणुका क्षेत्र में हुआ था। इनका जन्मांध होना भी विवादास्पद है। वल्लभाचार्य इनके गुरु थे। इनकी प्रेरणा से वे श्रीनाथजी मंदिर में कृष्ण की लीलाओं से संबंधित पदों की रचना करते थे। ये कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

वात्सल्य एवं शृंगार रस के वर्णन में वे अद्वितीय हैं। प्रस्तुत पद में सूरदास की अनन्य भक्ति-भावना का परिचय मिलता है। उनका मन सिवाय कृष्ण के कहीं ओर सुख नहीं पाता। जिन आँखों ने कमल के समान नयनवाले श्रीकृष्ण का दर्शन कर लिया हो वे ओर देव की आराधना कैसे कर सकती हैं ? आराध्य देव का गुणगान सूरने किया है। दूसरे पद में भी कृष्ण का मनमोहक वर्णन किया है। बालकृष्ण की चेष्टाओं के माध्यम से बालक कृष्ण का मनोरम्य वर्णन किया है।

विनय तथा भक्ति

(1)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंगा कौं छाँड़ि, पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिँ मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल भावै।
सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।

(2)

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरूनि चलन रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारू कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिँ पिए।
कठुला-कंठ, बज्र केहरि-नख, राजत रूचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अनत दूसरे स्थान पर, अन्यत्र **पंछी** पक्षी, विहग **महातम** महानता, माहात्म्य **ध्यावै** ध्यान करे **छाँड़ि** छोड़कर **पियासौ** प्यासा **दूरमति** खराब बुद्धिवाला **करीला** कंटीली झाड़ी **छेरी** बकरी **चारु** सुंदर **लोचन** आँख **मादक** नशायुक्त

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक -एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) जहाज का पंछी जहाज से उड़कर फिर कहाँ आता है?
   (2) सूरदास के मधुकर को करील फल क्यों नहीं भाता?
   (3) बालकृष्ण के मुख पर किसका लेप किया हुआ है?
   (4) सूर धन्य क्यों हुए?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :**

(1) सूर ने किन उदाहरणों द्वारा अपनी अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है?

(2) बालक कृष्ण के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

(3) सूरदास अपने आपको क्यों धन्य मानते हैं?

3. **तत्सम रूप दीजिए :**

अनत, पंछी, महातम, पियासौ, दुरमति, लट, मधुहिँ, केहरि

4. **समानार्थी शब्द लिखें :**

पक्षी, अंबुज, कूप, मधुकर, धेनु, छेरी, नवनीत, लोचन, कंठ, नख

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- चलचित्रों में पाए जानेवाले सूरदासजी के पदों का संग्रह कीजिए ।
- सूरदास के जीवन और साहित्य सर्जन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- सूरदास के चित्र प्राप्त करें तथा छात्रों से उनके जीवन और कथन के चार्ट्स करवाइए।
- मल्टीमिड़िया के उपयोग द्वारा सूरदास के पद की सी.डी. बनवाइए।

●

8 गुलमर्ग की खिड़की से एक रात

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई. : निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म जालंधर (पंजाब) में हुआ था। इनके पिता व्यवसाय से वकील थे, परंतु उनकी साहित्य में बहुत रुचि थी। अत: राकेश को बचपन से ही घर में पर्याप्त साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और तत्पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक इन्होंने 'सारिका' कहानी पत्रिका का सफल सम्पादन किया और बाद में स्वतंत्र लेखन करते रहे। कहानी लेखन के साथ-साथ इन्होंने उपन्यास और नाटक भी लिखे थे। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'इंसान के खंडहर', 'नए बादल', 'एक और आदमी' आदि कहानी संग्रह तथा ' अंधेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे-अधूरे' तथा 'लहरों के राजहंस' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। मोहन राकेश मूलत: एक सफल कहानीकार तथा नाटककार हैं।

'गुलमर्ग की खिड़की से एक रात' 'परिवेश' से लिया गया है। इस यात्रा वृत्तांत में लेखक ने गुलमर्ग के प्राकृतिक सौंदर्य का स्वानुभूत विवरण प्रस्तुत किया है। गुलमर्ग का सारा वातावरण इनको अपने में समाया सा लगता है। 'गुलमर्ग' की एक रात' का अकल्पनीय सौंदर्य इनसे भुलाया ही नहीं जाता।

कुछ जगहें होती हैं जिन्हें आँख एक बार देखती है तो चौंक उठती है, फिर धीरे-धीरे परिचित होकर उदासीन हो जाती है। गुलमर्ग ऐसी जगह नहीं है।

मैं जब पहली बार गुलमर्ग गया, तो मुझे वहाँ कुछ भी असाधारण नहीं लगा-एक खुला सपाट मैदान, देवदारों के घने झुरमुट और बस! तब मैं घण्टे-भर में सारा गुलमर्ग देख आया था।

मगर बाद में महीनों वहाँ रहने पर एहसास हुआ कि पहली बार तो क्या, बाद में भी कभी उस स्थान को पूरा नहीं देख पाया-उसे पूरा कभी देखा ही नहीं जा सकता। शायद यही कारण है कि गुलमर्ग में रहकर वहाँ के साथ व्यक्ति की आत्मीयता धीरे-धीरे इतनी गहरी हो जाती है कि वह अपने को भी उस सपाट मैदान के एक हिस्से के रूप में ही देखने लगता है- काँपती तितलियों उठते बादलों और बर्फ से चमकती पहाड़ियों की तरह। दूसरी ओर वह पूरा विस्तार, जिसमें वह स्वयं भी रहता है, उसे अपने में समाया-सा लगता है- सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों सन्ध्याएँ, घना कोहरा, पीली धूप और सब-कुछ! इसलिए जब व्यक्ति गुलमर्ग से चलता है, तो एहसास होता है अपने से ही बिछुड़ने का- अपने उस रूप से जो कि इतना परिचित होते हुए भी सदा अपरिचित बना रह जाता है!

गुलमर्ग में सपने फूल बनकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर, आकाश में। आँखें मुग्ध होकर देखती रहती हैं और फूलों में नये-नये रंग भर जाते हैं, वातावरण में नयी-नयी कोंपलें फूट आती हैं। हर क्षण एक नये अनुभव, नये रोमांच की सृष्टि होती हैं।... बादलों के पोर्टिको के नीचे लोग बाँहें फैलाये घास पर बैठे हैं। दूर-दूर तक सैलानियों की पंक्तियाँ घोड़े दौड़ाती नज़र आती हैं। रंगों के कुछ बिन्दु हरियाली के पट पर जहाँ-तहाँ छिटके हैं। सहसा प्रकाश से नन्हीं-नन्हीं पारदर्शक बूँदे पड़ने लगती हैं। रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है। हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है। मैदान सुरमई आभा ओढ़ लेता है। अब चारों तरफ़ धुन्ध-ही-धुन्ध है और बेबस होकर फैली पगडण्डियों की पतली-पतली नरम बाहें। जब तक बादल बरसेगा, बाँहें फैली रहेंगी-ऐसी ही कोमल, विस्मृत और निढाल।

सूरज चमकेगा तो फूल में से नया सपना जन्मेगा। आकाश में बादलों के नन्हें-नन्हें द्वीप इधर-उधर भटकते फिरेंगे। भेड़ों और बकरियों के रेवड़ पगडण्डियों पर टँक जाएँगे। दिन तब रात की प्रतीक्षा करता-सा प्रतीत होगा। रात आएगी तो सब कुछ खामोश हो जाएगा-मैदान की वह खामोशी भी, जो दिन के समय इतनी वाचाल हो जाती है!

गुलमर्ग की वह रात मुझे कभी नहीं भूलेगी। मैं होटल की खिड़की में खड़ा था। दूर-बहुत दूर सामने से एक बरसती घटा मेरी तरफ़ बढ़ती आ रही थी। मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कब वह मुझ तक पहुँचे और मुझे अपने में लपेट ले। बरसती घटा में घिर जाने से बड़ा सुख मैंने बहुत कम जाना है। घटा ऊपर से घिर आये और व्यक्ति को छोटा करके उस पर छा जाए, यह इससे अलग स्थिति है। इस बार आती हुई घटा का हर संकेत मेरे सामने था और मैं उसके बराबर का होकर अपनी खिड़की में खड़ा उसे बुला रहा था कि आ... आ... आ, मैं

तुझसे कमज़ोर नहीं हूँ। हवा तेज़ थी, मगर घटा तेजी से नहीं बढ़ रही थी- हालांकि तूफ़ान बहुत उठा हुआ था। बार-बार ज़ोर की गरज होती थी जिससे धरती और आकाश की शिराएँ काँप जाती थी। बार-बार सामने के चित्रपट पर बिजली कौंधती थी-और प्रकाश का वह भयानक विस्फोट हर चीज़ को नंगा कर जाता था। मैं खुश था कि थोड़ी देर में ये बूँदे मेरे ऊपर बरसेंगी-बिजलियों का यह क़हर मेरे ऊपर टूटेगा। मैं बाँहें फैलाकर सामने से उसे अपने ऊपर लेने के लिए तैयार था।

मगर अचानक हवा रूक गयी। बढ़ता हुआ तूफ़ान जहाँ का तहाँ ठिठक गया और दूर ही पर कटे पक्षी की तरह दम तोड़ने लगा। बिजली की साँस रुकने लगी-और मेरी भी-क्योंकि हवा के रुक जाने से मुझे भी बहुत ऊँचे आसमान से नीचे आना पड़ा था। तूफ़ान का जोम उतर गया और उसके साथ ही मेरा भी। मैं उसके बराबर का कभी नहीं हो सका।

वे ऐसे क्षण थे जो जीवन में दो-एक बार ही आते हैं। गुलमर्ग में रहते हुए ऐसे क्षण हर किसी के जीवन में किसी-न-किसी रूप में अवश्य आते होंगे। तभी तो मुद्दत तक वहाँ रह चुकने पर भी कोई आकर्षण व्यक्ति को फिर खींचकर वहाँ ले जाता है। वरना वहाँ है क्या-एक खुला सपाट मैदान जहाँ ज्यादा गॉल्फ खेली जा सकती है! व्यक्ति क्यों बार-बार वहाँ जाना चाहता है? क्या गॉल्फ खेलने के लिए ही?

शब्दार्थ और टिप्पणी

गुलमर्ग कश्मीर का एक सुन्दर प्राकृतिक रमणीय स्थान **तिगलिया** तिराहा, जहाँ तीन रास्ते मिलते हों **रोमांचकी** आनन्द देनेवाली, हर्षित करनेवाली **पोर्टिको** बरामदा, ड्योढ़ी **रेबड़** झुंड **कहर** अत्याचार **दम तोड़ना** मर जाना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) गुलमर्ग का भौगोलिक वातावरण कैसा है?
   (2) लेखक ने गुलमर्ग के साथ व्यक्ति की आत्मीयता बढ़ने का क्या कारण बताया है?
   (3) खिड़की के पास खड़ा लेखक बरसाती घटा को देखकर किस बात की प्रतीक्षा करने लगा?
   (4) तूफ़ान के एकाएक रूक जाने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ?
   (5) लेखक को किस बात का अफसोस हुआ?
   (6) लेखक ने गुलमर्ग की पगडण्डियों के लिए क्या उपमा दी?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) गुलमर्ग से विदा होते समय सैलानियों को कैसा अहसास होता है?
   (2) लेखक ने गुलमर्ग के दिन को वाचाल क्यों कहा?
   (3) सैलानी कब और क्यों सिहर जाते हैं?
   (4) लेखक की प्रतीक्षा असफल क्यों हुई?
3. **निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) लेखक ऐसा क्यों कहता है कि गुलमर्ग को कभी पूरा देखा नहीं जा सकता?
   (2) 'दिन में गुलमर्ग की शोभा' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
   (3) प्रकाश, बादल तथा हवा के कारण गुलमर्ग दर्शन में आए रोमांच का वर्णन कीजिए।
4. **पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) गुलमर्ग में सपने फूलकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर आकाश में।
   (2) रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है।

5. 'हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है' - यह दृश्य किस समय का है?

(अ) प्रात:काल (ब) दोपहर (क) सायंकाल (ड) अर्धरात्रि

6. (1) उचित उपसर्ग जोड़कर उनके विरुद्धार्थी शब्द बनाइए :

साधारण, मान, उदार, रंग, स्मृति

(2) उचित प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाइए :

सुरमा, बरसात, तूफ़ान, चमक, विस्फोट

(3) उचित प्रत्यय जोड़कर संज्ञा बनाइए :

लाल, खामोश, कमजोर, आकर्षक

7. **वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

विस्फोट, आकर्षण, पारदर्शक, रोमांचक

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राहुल सांस्कृत्यायन की 'मेरी लद्दाख यात्रा' पुस्तक पढ़िए।
- आपने जिन पर्यटन स्थलों की यात्रा की है, उनका वर्णन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- किसी यात्रा का आयोजन करें।
- यात्रा वर्णनों का संकलन करवाइए।

●

9 निर्भय बनो

फणीश्वरनाथ रेणु

(जन्म : सन् 1921 ई. : निधन : सन् 1977 ई.)

प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार 'रेणु' का जन्म बिहार में वर्तमान बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके गाँव, विराटनगर (नेपाल) तथा वाराणसी में हुई। उन्होंने भारत तथा नेपाल के स्वाधीनता आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया तथा कारावास भोगा। कुछ समय तक उन्होंने आकाशवाणी पटना में कार्य किया। अपने पहले उपन्यास ''मैला आँचल'' के प्रकाशन के साथ ही वे विख्यात हो गए। उसके पहले वे एक कहानीकार तथा रिपोर्ताज लेखक के रूप में साहित्य-जगत में सुपरिचित हो चुके थे।

'रेणु'जी की रचनाओं में उनका जीवन अनुभव मुखरता है। जीवन की सुरुपता-कुरुपता को मानवीय सहृदयता तथा पूर्ण तटस्थता के साथ उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। उनकी भाषा में लोक बोलियों के शब्दों का प्रयोग ध्यानाकर्षक है। भाषा में ताजगी और नयापन है। मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, कितने चौराहे आदि उनके प्रमुख उपन्यास तथा ठुमरी, अग्निखोर, एक आदिमरात्रि की महक आदि उनके प्रमुख कहानीसंग्रह हैं। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया था।

यह अंश उनके उपन्यास 'कितने चौराहे' के सातवाँ प्रकरण से लिया गया है। विद्यार्थी जीवन में ही मानवीय-सामाजिक मूल्यों के प्रति कथानायक मनमोहन का कैसे झुकाव होता है, इस अंश में उसका चित्रण है। शिक्षक इस पाठ से निर्भयता के गुण का विकास करने का प्रयास करेगा।

प्रियोदा !

प्रियव्रत राय मैट्रिक में पढ़ता है। स्कूल के सभी लड़के और मास्टर उसको प्यार करते हैं। स्कूल ही नहीं, उस छोटे-से कस्बे में उसको प्रायः सभी जानते हैं। हर रविवार की सुबह बगल में झोली लटकाकर 'संन्यासी-आश्रम' के लिए मुठिया वसूलने निकलता है- कभी अकेला, कभी साथियों के साथ। स्कूल का कोई छात्र या शिक्षक बीमार पड़ा कि प्रियोदा अपनी टोली के साथ उसके घर पर हाजिर। जब तक रोगी भला-चंगा न हो जाए, उसका दल सेवा में जुटा रहता है।

रोबी और कालू प्रियोदा के दल में हैं। उन लोगों ने मनमोहन को भी अपने साथ प्रियोदा के दल में शामिल कर लिया।

हर शनिवार को परमान के उस पार 'बालूचर' पर प्रियोदा के दल के सदस्य, स्कूल की छुट्टी के बाद जमा होते हैं। खेल-कूद, गाने-बजाने के अलावा प्रियोदा दुनिया-भर की खबर सुनाते हैं। रविवार का प्रोग्राम तय करते हैं, किस मुहल्ले में कौन जाएगा मुठिया वसूलने। किस बीमार की सेवा करने कौन-कौन जाएँगे।

उस दिन मनमोहन का परिचय देते हुए कालू ने कहा था, ''प्रियोदा! यह मोना-मनमोहन। खूब तेज लड़का है। 'क्लब' का सदस्य होना चाहता है।''

प्रियोदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखकर पूछा था, ''भारतवर्ष के एक ऐसे आदमी का नाम लो, जिसे लोग भगवान का अवतार समझते हैं।''

''महात्मा गांधी।''

''ठीक है। तुम पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते हो?'' प्रियोदा का दूसरा सवाल।

मनमोहन चुप रहा। फिर बोला, ''वकील।''

सभी ठठाकर हँसे । लेकिन प्रियोदा गम्भीर ही रहे। बोले, ''ठीक है। बीमार लोगों की सेवा करना जानते हो?''

''सीख लेंगे।''

''शाबाश! यदि रोगी हैजा से पीड़ित हो?''

मनमोहन चुप रहा, क्योंकि हैजा के नाम से ही उसे डर लगने लगता है।

''गाना जानते हो?''

''जी।''

''तैरना?''

''जी नहीं।''

प्रियोदा ने सूर्यनारायण नामक सदस्य से कहा, ''सूरज! मोना तैरना नहीं जानता।''

''सीख जाएगा। एक दिन उठाकर पानी में फेंक दूँगा, खुद तैरने लगेगा।''

सभी हँसे। सूर्यनारायण पढ़ने में कमज़ोर हैं, लेकिन शरीर उसका मजबूत है। रोज एक सौ 'डंड-बैठक' करता है। उसके साथी 'सूरज पहलवान' कहते हैं, उसको। दल के सदस्यों को तैरना सिखलाना उसी का काम है।

उस दिन सभी ने नए सदस्य मोना, यानी मनमोहन से गीत सुनने की इच्छा प्रकट की। मनमोहन पहले लजाया, किन्तु जब प्रियोदा ने आग्रह किया तो उसने खखारकर गला साफ किया। कौन गीत गाये वह? उसने शुरू किया।

''राम रहीम न जुदा करो भाई
दिल को सच्चा रखना जी...।''

गीत समाप्त होने के बाद प्रियोदा बोले, ''वाह! बहुत मीठा गला है तुम्हारा! कालू, तुम 'प्रभातफेरी' वाले दोनों गीत मोना को सिखा देना।''

सूरज पच्छिम की ओर झुक गया। बालूचर पर लाली उतर आई। परमान की धारा पर डूबते हुए सूरज की अंतिम किरण झिलमिलाई। पखेरू दल बाँधकर बाँस-वन की ओर लौटने लगे। प्रियोदा के दल के सभी सदस्य पंक्ति बाँधकर लौटे। पुल के पास एक गाड़ीवान तन्मय होकर गीत गा रहा था- ''भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला गरीब'क दीन।''

सूरज ने भी उसी सुर में सुर मिलाकर गाना शुरू किया- ''एक टा जे लोटा छल, बेटा छल तीन-पनियाँ पीबैत काल लोटा लेलक छीन...''

कृत्यानन्द झा ने कहा, ''विद्यापति की 'लाचारी' है।''

''लाचारी?''

''लाचारी।''

-ट्रट्ठाँय!...

बालूचर के उस पार से किसी ने फायर किया। एक पखेरू बालू पर गिरकर छटपटाने लगा। उसका जोड़ा विकल होकर बहुत देर तक रोता रहा। मटमैले अन्धकार में एक अर्दलीनुमी आदमी दौड़ा हुआ आया और मरी हुई चिड़िया के डैने को पकड़कर चिल्लाया, ''मिल गया हुजूर!''

इब्राहीम बोला, ''सब-डिप्टी साहब का अर्दली है। साला, भारी खचड़ा है।''

प्रियोदा के मुँह से अचानक निकला, ''हॉल्ट!''

तब इब्राहीम को अपनी गलती का एहसास हुआ। दल का नियम है कोई सदस्य किसी किस्म का अपशब्द या गाली मुँह से नहीं निकालेगा। इब्राहीम ने तुरंत सिर झुकाकर दल के नायक प्रियोदा और सदस्यों से माफ़ी माँगी, ''बात यह है कि साले ने...।''

सभी हँसे। प्रियोदा ने गंभीर होकर कहा, ''इब्राहीम, यह तुम्हारी आठवीं गलती है, 'दस' होते ही हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे।''

इब्राहीम ने पूछा, ''लेकिन सरकारी अफ़सरों को गाली देने में क्या हर्ज है?''

''तुम्हारा मुँह खराब होगा। उनका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।''

''मगर वे जो गाली देते हैं?''

''वे ही क्यों, बहुत लोग गालियाँ बकते हैं।''

''नहीं प्रियोदा, आप इब्राहीम को नहीं समझा सकिएगा। वह महीन बात देरी से बूझता है। मैं समझा देता हूँ। देखो... इब्राहीम! यदि 'क्लब' का मेम्बर रहना है तो इसके 'रूल्स' को मानना होगा। नियम है कि कोई सदस्य आपस में बातचीत के सिलसिले में भी कोई खराब शब्द नहीं बोलेगा। जानते हो न?... बस। बात खत्म।''

'सहुआइन-धर्मशाला' के पास आकर सभी ने एक-दूसरे से विदाई ली। कालू ने कहा, ''मोना, तू रास्ते में डरेगा, मैं जानता हूँ। चल, मैं पहुँचा दूँ।''

प्रियोदा ने कहा, ''मोना डरता है? मैं उसे पहुँचा दूँगा। तू घर जा कालू।''

रास्ते में प्रियोदा चुप रहे। एक सूनी जगह पर आकर रुक गए।... सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े पीपल के पेड़। दोनों ओर बहुत दूर तक खंडहर और मैदान। पास के एक उजड़े हुए मकान की ओर इशारा कर प्रियोदा ने कहा, ''जानते हो, इस घर में कभी मुर्दों की चीर-फाड़ होती थी- पोस्टमार्टम-हाउस था यह। इसीलिए, लोगों को डर है कि आसपास के पेड़ों पर भूत-पिशाच किलकिल करते रहते हैं, मैदान में प्रेतनियाँ नाचती हैं- संतालियों की तरह झुंड बाँधकर।... क्यों, डरने लगा?''

''अकेले यहाँ आ सकते हो?''

''जी नहीं।''

प्रियोदा हँसे। बोले, ''देख मोना, भूत-प्रेत ऐसे आदमी को कभी नहीं तंग करता, जो 'दस' काम करता हो। तुम्हारी उम्र में मैं भी डरता था। मेरे गुरु महाजन ने मुझसे हँसकर कहा कि 'दस' का काम करनेवाला तो खुद 'भूत' होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?... चलो, शुरू करो तो वह गाना-राम रहीम ना...''

मनमोहन गाने लगा, ''राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी-ई-ई-ई!!''

शब्दार्थ और टिप्पणी

परमान एक नदी का नाम **बालूचर** रेतीला नदी पट **जुदा** अलग **आग्रह** अनुरोध फ़रमाइश, हठ **पखेरू** पंखवाले, पक्षी **दल** झुंड, टीली **पंक्ति** कतार **तन्मय** तल्लीन, समाधिस्थ **नाचारी** एक लोकगीत **विकल** व्याकुल **हॉल्ट** रुको **हर्ज** नुकसान **रुल्स** नियम **अपशब्द** गाली, बुरा शब्द **संताल** एक आदिवासी जाति **खचड़ा** अड़गेबाज, मूर्ख

मुहावरे

मुठिया वसूलना किसी नेक काम के लिए मुट्ठीभर अनाज की भीख माँगना **भला चंगा** स्वस्थ **सिर से पैर तक देखना** भली भाँति देखना **महीन बात** सूक्ष्म बात

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**
   (1) प्रियोदा को सभी लोग क्यों प्यार करते है?
   (2) प्रियोदा के दल के तीन सदस्यों के नाम बताइए।
   (3) प्रियोदा की टोली कौन-कौन से सेवा कार्य करती है?
   (4) मनमोहन को तैरना सिखाने की जिम्मेदारी किसे सौंपी गई?
   (5) इब्राहीम ने किस बात के लिए माफ़ी माँगी?
   (6) अपशब्द न बोलने के बारे में क्लब का क्या नियम था?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) प्रियोदा के दल के सदस्य शनिवार की शाम को कहाँ पर एकत्र होते हैं?
   (2) स्कूल की छुट्टी के बाद सभी सदस्य मिलने पर क्या करते हैं?
   (3) मनमोहन ने प्रियोदा के पहले प्रश्न के उत्तर में किस भारतीय महापुरुष का नाम लिया?
   (4) पक्षी को किसने गोली मारी थी?
   (5) प्रियोदा के मुँह से 'हॉल्ट' क्यों निकला?
   (6) सड़क के दोनों ओर कौन-से वृक्ष थे?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) कस्बे के अधिकांश लोग प्रियोदा और साथियों को क्यों पहचानते थे?

(2) प्रियोदा की टोली शनिवार को स्कूल से छूटने के बाद क्या करती है?

(3) मनमोहन को तैरता सिखाने के बारे में सूर्यनारायण ने क्या कहा?

(4) पुल के पास गाड़ीवान क्या कर रहा था?

(5) मनमोहन का भय दूर करने के लिए प्रियोदा ने क्या किया?

(6) भूत-प्रेत के बारे में प्रियोदा ने मनमोहन से क्या कहा?

(7) प्रियोदा की टोली का रविवार को क्या कार्यक्रम होता था?

4. **सविस्तार समजाइए :**

(1) सूरज पश्चिम की ओर झुक गया।

(2) दस और देश का काम करनेवाला तो खुद भूत होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?

(3) राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी...

(4) भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला...

5. **सही जोड़े मिलाइए :**

मनमोहन	पहलवान
प्रियव्रतराय	खचड़ा
सूर्यनारायण	एक नदी
डिप्टी का अर्दली	मैट्रिक का विद्यार्थी
परमान	हैजे से डरनेवाला

6. **शब्द समूहो के लिए एक-एक शब्द लिखिए :**

(1) दूसरों के किए हुए उपकार को माननेवाला...

(2) दूसरों के किए गए उपकार को न माननेवाला...

(3) मुर्दों के चीर-फाड़ की जगह.....

(4) जहाँ बीमारों को भर्ती करके इलाज होता है...

7. **सूचनानुसार उत्तर दीजिए :**

(क) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए:

गरीब, प्यार, स्वस्थ, गलत, उजड़ा

(ख) दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए:

सुबह, शाम, दल, कमज़ोर, मकान

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- यदि उपलब्ध हो सके तो 'कितने चौराहे' उपन्यास पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- निर्भयता के गुणवाली कहानियाँ ढूँढ़कर विद्यार्थियों को पढ़कर वर्ग में सुनाइए।

●

कहावतें

हम लोगों को उचित हैं कि दूसरों के लिए जिएँ। जो तन-मन-धन से परोपकार करते हैं, वे ही धन्य हैं। यदि अपने के लिए जन्म गँवा दिया तो क्या किया? **अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।**

उपर्युक्त अनुच्छेद में 'अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है'- कहावत है। जो अर्थ का पूर्ण रूप से स्पष्ट करनेवाला स्वतंत्र वाक्य है। जिसका उपयोग किसी कही हुई बात के समर्थन में प्रयुक्त होता है।

कहावत का संबंध किसी-न-किसी घटना से हुआ करता है। लोग उस घटना से संबंधित कोई पंक्ति गढ़ लिया करते हैं और जब कभी वैसा प्रसंग आता है, तब वे उस पंक्ति को दुहराकर घटनाजनित बातों की पुष्टि करते हैं। जैसे- यदि कोई किसी कार्य को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने की बात करे और प्रस्तुति करण का मौका देने पर कोई बहाना बनाए तो उसके बारे में कहा जाएगा- 'नाच न जाने आँगन टेढा'। अर्थात् जब कोई विशेष अनुभव सामान्य जन-जीवन में सबके मन और बुद्धि पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ हो जाता है तब उस अनुभव का कथन कहावत का रूप धारण कर लेता है।

कहावत लोक से संबंधित है इसलिए इसका नाम 'लोकोक्ति' भी है ।'लोकोक्ति' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है- लोक+उक्ति। जिसका अर्थ है- 'लोक' में प्रचलित उक्ति या कथन। ऐसा कथन जो व्यापक लोक अनुभव पर आधारित हो, 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहलाता है।

लोकोक्ति या कहावत मानव के अनुभवों की सुंदर अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान पीढ़ी को पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती है। उसमें गागर में सागर अथवा बिंदु में सिंधु भरने का अद्‌भुत गुण होता है। इनके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य पूर्ण, स्पष्ट तथा प्रभावशाली हो जाता है।

प्रमुख कहावतें (लोकोक्तियाँ), उनके अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग :

1. <u>अंत भले का भला</u> - (अच्छे काम का परिणाम अच्छा होता है) - शैलेश कष्ट सहकर भी ईमानदारी से परिश्रम करता है इसी कारण वह आज ऊँचे पद पर पहुँच गया। इसलिए कहा गया है- अंत भले का भला।
2. <u>अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा</u>- (अयोग्य शासक के कारण कुप्रशासन)- उस कार्यालय का कोई कर्मचारी काम नहीं करता, क्योंकि वहाँ का अधिकारी ही भ्रष्ट है। चारों तरफ 'अंधेरी नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' वाली बात है।
3. <u>अंधी पीसे कुत्ता खाय</u>- (काम करे कोई, फल कोई खाए)- पिताने दिन-रात कमाई करके धन इकट्‌ठा किया और उसका बेटा मौज उड़ाते-उड़ाते नहीं थकता। इसी को कहते हैं- अंधी पीसे कुत्ता खाय।
4. <u>अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत</u>- (हानि हो जाने पर पछताने से क्या लाभ)- पहले तो बहुत समझाने पर भी तुमने परिश्रम नहीं किया अब असफल हो गये तो आँसू बहाने लगे। क्या तुम नहीं जानते- अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
5. <u>मार के पीछे भूत भागे :</u> (किसी की तरह से समस्या का हल करना)
   जब समस्या हद से बढ़ जाती है, तब सरल उपाय के बजाय कठिन या शिक्षात्मक रवैया अपनाना ।
6. <u>आँख का अंधा नाम नयनसुख</u>- (गुणों के विरुद्ध नाम होना) - उसका नाम तो है वीरसिंह, मगर वह रात में चूहे से डर गया। उसे देखकर तो यही कहावत याद आती है- आँख का अंधा नाम नयनसुख।
7. <u>आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास</u>-(अच्छा काम छोड़कर महत्त्वहीन काम में लग जाना)- तुम्हें छात्रावास में इसलिए भेजा था कि तुम परीक्षा में अव्वल आ सको पर तुमने तो यहाँ रहकर भी बेकार की बातों में समय बरबाद करना शुरू कर दिया। इसे कहते हैं आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।
8. <u>एक पंथ दो काज</u>- (एक साधन से दो काम होना)- मैं दिल्ली नौकरी का साक्षात्कार देने के लिए गया था। वहाँ लाल किला आदि भी देख आया। इसे कहते हैं- एक पंथ दो काज।

9. <u>कंगाली में आटा गीला</u>- (मुसीबत में और मुसीबत आना)- व्यापार हेतु कल बैंक से रुपया उधार लाया था वह भी चोरी हो गया। सच है कंगाली में आटा गीला।

10. <u>कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली</u>- (दो व्यक्तियों की स्थितियों में अंतर)- उस साधारण गायिका की तुलना लता मंगेशकर से करना उचित नहीं- कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।

11. <u>ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया</u>- (भाग्य की विचित्रता) - कुछ लोग दूसरों के लिए मंदिर तथा धर्मशालाएँ बनवातें हैं तथा कुछ अपने लिए एक समय का भोजन नहीं जुटा पाते। इसे कहते हैं ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।

12. <u>एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा</u>- (एक दोष के साथ-साथ दूसरा दोष भी लग जाना) - वह शराबी तो था ही, जुआ भी खेलने लगा। इसे कहते हैं एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा।

13. <u>काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती</u>- (छल, कपट तथा चालाकी से एक ही बार काम निकलता है)- एक बार तो तुम मुझे धोखा देकर रुपए ले जा चुके हो, अब मैं तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आ सकता क्योंकि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

14. <u>खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे</u>- (लज्जित या अपमानित होकर इधर-उधर रोष प्रकट करना) - जब पुलिस तुम्हारी पिटाई कर रही थी तब तो तुम कुछ भी न बोले, अब मुझ पर बरस रहे हो। किसी ने ठीक ही कहा है- खिसियानी बिल्ली खंभा नाचे।

15. <u>घर की मुर्गी दाल बराबर</u> - (आसानी से प्राप्त हुई वस्तु को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता)- उसका बड़ा भाई डॉक्टर है मगर वह बीमार हुआ तो शहर से दूसरा डॉक्टर बुलाया गया। इसे कहते हैं- घर की मुर्गी दाल बराबर।

16. <u>चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात</u>- (थोड़े समय का सुख)- धन-दौलत, ऐश्वर्य तथा जवानी पर गर्व नहीं करना चाहिए। जानते नहीं संसार की रीति-चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

17. <u>छछूँदर के सिर में चमेली का तेल</u>- (अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज मिल जाना) - मनोज को न पढ़ाने का काम आता है न वह बी.एड्. है, पर आज वह शिक्षक है। ऐसे लोगों के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है- छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

18. <u>जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय</u>- (जिसका रक्षक भगवान है उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता)- कार गहरी खाई में गिर गई किंतु सभी यात्री सकुशल हैं। सच है जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय।

19. <u>डूबते को तिनके का सहारा</u>- (विपत्ति में जरा सी भी मदद किसी को उबार सकती है)- वह जीवन से निराश हो चुका है तुम थोड़ा-सा उत्साह दे दो शायद उबर जाए, डूबते को तिनके का सहारा काफी होता है।

20. <u>नाम बड़े दर्शन छोटे</u>- (प्रसिद्धि अधिक किंतु तत्त्व कुछ भी नहीं)- तुम्हारे विद्यालय की बहुत ही प्रशंसा सुन रखी थी, पर आकर देखा तो पढ़ाई का स्तर कुछ भी नहीं। इसीको कहते हैं- नाम बड़े दर्शन छोटे।

21. <u>नाच न जाने आँगन टेढ़ा</u>- (गुण न होने पर बहाना बनाना या दूसरों को दोष देना)- अरे भाई, तुम्हें गाना तो ठीक से आता नहीं और कभी तुम बता रहे हो हारमोनियम में। इसी को कहते हैं- नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

22. <u>पर उपदेश कुशल बहुतेरे</u>- (दूसरों को उपदेश देने में सब चतुर होते हैं)- मंदिर में बैठकर उपदेश देते हो कि मदिरापान पाप कर्म है और घर में बैठकर स्वयं मदिरापान कर रहे हो। इसीको कहते है- पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

23. <u>बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी</u>- (आनेवाला दुःख आकर ही रहता है) - तुम अपने अपराधों को कब तक छुपाते रहोगे? आखिर बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

24. मन चंगा तो कठौती में गंगा- (हृदय की पवित्रता हो तो घर में ही तीर्थयात्रा का लाभ मिल सकता है)- जिसका मन पवित्र है, उसे तीर्थयात्रा करने की आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि किसीने सच ही कहा है- मन चंगा तो कठौती में गंगा।

25. होनहार बिरवान के होत चीकने पात- (योग्य व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं)- गोपालदास नीरजने पहली कविता दस वर्ष की उम्र में ही लिख दी थी। सच है- होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

26. हाथ कंगन को आरसी क्या?- (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं)- तुम कहते हो कक्षा में पच्चीस छात्र हैं मैं कहता हूँ तीस छात्र हैं। चलकर कक्षा में गिन लेते हैं- हाथ कंगन को आरसी क्या?

●

10	# भारत-गौरव

मैथिलीशरण गुप्त

(जन्म : सन् 1886 ई. : निधन : सन् 1964 ई.)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही कविता में इनकी रुचि थी। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ हिन्दी की पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन ने इनके कवि-व्यक्तित्व का परिष्कार कर दिया। राम-भक्ति में सराबोर पारिवारिक संस्कारों ने इन्हें राम-काव्य लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर इनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और स्वदेश गौरव की गूंज सुनाई देने लगी। इसी कारण ये राष्ट्रकवि के संबोधन से प्रसिद्ध हुए। 'भारत-भारती', 'साकेत', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। हिन्दी साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनुपम योगदान के कारण इन्हें 1954 में 'पद्म-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया।

प्रस्तुत काव्य 'भारत-भारती' से लिया गया है जिसमें तीन खंड में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य चित्रित है। गुप्तजी ने भारत के अतीत का गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया है और इन्हीं विशेषताओं के आधार पर उसे विश्व के सिरमौर पद पर प्रतिष्ठापित किया है। इस काव्य में कवि ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति का गौरव गान किया है। इसके साथ-साथ आर्यों के महान जीवन आदर्शों का भी चित्रण किया है।

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है?
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यही विस्तार है।

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े,
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे;
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार-हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

शब्दार्थ और टिप्पणी

गौरव सम्मान, प्रतिष्ठा **भू-लोक** संसार, दुनिया **लीला स्थल** महान पुरुषों की क्रीड़ा भूमि **उत्कर्ष** उन्नति, प्रगति **सिरमौर** श्रेष्ठ **पुरातन** प्राचीन **भव-भूति** संसार का वैभव **विधि** ब्रह्मा, सृष्टि की रचना करनेवाला देवता **आचार्य** शिक्षक, आदर्श आचार को आचरण में लानेवाला **अधोगति** अवनति, दयनीय दशा **स्वार्थरत** केवल अपना ही लाभ देखनेवाला **मदिरा** शराब, मद्य **संसार** दुनिया **निश्चेष्ट** निष्क्रिय, चेष्टारहित

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) भारत को प्रकृति का लीला-स्थल क्यों कहा है?

(2) भारतवर्ष को वृद्ध क्यों कहा गया है?

(3) विधाता ने नर-सृष्टि का विस्तार कहाँ से किया है?

(4) आर्य किन-किन विषयों के आचार्य थे?

(5) आर्यों की संतान आज किस स्थिति में जी रही है?

(6) आर्यों की क्या विशेषताएँ रही हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) गुप्तजी ने भारत के गौरव को किस रूप में हमारे सामने रखा है?

(2) भारतवासियों के बारे में गुप्तजी क्या कहते हैं?

3. योग्य विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) भारत को .... कहा गया है ।

(क) ऋषिभूमि (ख) तपोभूमि (ग) वीरभूमि

(2) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का .... है।

(क) तिलक (ख) आभूषण (ग) सिरमौर

(3) विधि ने .... का विस्तार यहीं से किया है।

(क) नरसृष्टि (ख) जीवसृष्टि (ग) पशुसृष्टि

(4) भारत के निवासी .... हैं।

(क) मंगोल (ख) आर्य (ग) शक

(5) आर्यों की संतानों की आज .... हो गई है।

(क) अधोगति (ख) उन्नति (ग) अवगति

4. 'क' विभाग को 'ख' विभाग के साथ उचित रूप में जोड़ते हुए पूरा वाक्य लिखिए :

'क'	'ख'
(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का	(1) उत्कर्ष है।
(2) विद्या कला कौशल के	(2) प्रथम भंडार है।
(3) सम्पूर्ण देशों से अधिक भारत का	(3) सिरमौर है।
(4) भगवान की भव-भूति का	(4) दुनिया में कोई दूसरा नहीं है।
(5) भारत जैसा पुरातन देश	(5) आर्य हैं।
(6) भारत के निवासी	(6) प्रथम आचार्य आर्य हैं।

5. भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।

(2) भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।

6. शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

अधोगति, वृद्ध, पुरातन, प्रथम, विस्तार, पुण्यभूमि, उत्कर्ष, उच्च

7. शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

हिमालय, गंगा, गिरि, भूमि, विश्व, मदिरा

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- भारत-गौरव से संबंधित कविताओं का संकलन कीजिए।
- 'भारत देश' पर एक निबंध लिखिए।

●

11 एक यात्रा यह भी

रामदरश मिश्र

(जन्म : सन् 1924)

रामदरश मिश्रजी हिन्दी साहित्य के प्रथम कोटि के साहित्यकार है। आपने कहानियाँ, काव्य एवं उपन्यास आदि क्षेत्रों में अपनी कलम चलाई है। आपके बहुचर्चित उपन्यास हैं- जल टूटता हुआ और 'पानी के प्राचीर'। आपकी कविताओं के संग्रह हैं- 'बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप', 'जुलूस कहाँ जा रहा है?', 'आम के पत्ते'। आपके कहानी संग्रह हैं- 'खाली घर', 'बसंत का एक दिन', 'इकसठ कहानियाँ', तथा 'मेरी प्रिय कहानियाँ'। 'आम के पत्ते' काव्य संग्रह को व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है। आपका हिन्दी अकादमी के शिखर सम्मान एवं उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के भारतभारती पुरस्कार से प्रतिष्ठित किया गया है।

'एक यात्रा यह भी'- कहानी में रिक्शावाले से परिचित होने पर उसके जीवन की घटनाओं से नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण देखकर तथा जीवन में उतारे गए कर्तव्यबोध से प्रेरणा प्राप्त होती है- स्त्रीसम्मान, स्त्री सुरक्षा एवं आत्मीयतापूर्ण संबंधों को खूबी से प्रस्तुत किया गया है जो अत्यंत प्रेरक है।

मैं बहुत यात्रा-भीरु हूँ। यात्रा पर निकलते समय डर बना होता है कि पता नहीं कैसे-कैसे लोगों से पाला पड़ेगा। सबसे बड़ी असहजता तो अनुभव होती है अंट-शंट किराया माँगनेवाले ऑटोवालों से। नए शहर में कैसे-कैसे लोग-मिलेंगे, यह चिंता भी बनी होती है।

तो इस बार एक डॉक्टर से मिलने के लिए ग्वालियर जाना पड़ गया। पत्नी साथ थी, इसलिए आश्वस्ति बनी हुई थी। स्टेशन पर उतरते ही ऑटोवाले पीछे पड़ गए। हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे। एक नवयुवक ऑटोवाला साथ लग गया। हम कुछ बोले बिना आगे बढ़ते रहे कि उसकी आवाज आई, ''बाबूजी, आप आखिर कहीं जाएँगे ही और कोई ऑटो करेंगे ही, तो फिर मेरा ऑटो क्यों नहीं?'' उसकी जिद और आवाज में कुछ ऐसा आकर्षण महसूस हुआ कि मैंने स्वीकृति दे दी।

वह प्रेम-भरी बातें करता रहा और हमें डॉक्टर के यहाँ पहुँचा दिया। उसके द्वारा बताए वांछित पैसे देकर डॉक्टर के घर की कॉल-बेल बजाई। ज्ञात हुआ कि डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी है।

ऑटोवाला बिना हमारे कहे हमारा इंतजार कर रहा था। हमें नई जगह पर पहुँचा दिया। मैंने पूछा, ''कितने पैसे दे दूँ?''

बाबूजी, ''जो इच्छा हो दे दीजिए। वैसे डॉक्टर के घर से यहाँ तक का किराया तो अतिरिक्त हो गया न।''

उसने पूछा, ''बाबूजी यहाँ से कहाँ जाएँगे?'' मैंने होटल का नाम बता दिया और कहा, ''भाई, तुम जाओ, यहाँ देर लग सकती है।''

वह कुछ बोला नहीं। हम डॉक्टर के पास चले गए। घंटा भर बाद निकले तो देखा, वह वहीं खड़ा था। अब हमें महसूस होने लगा था कि यह ऑटोवाला कुछ और है। वह हमारे भीतर घर करता गया। होटल पर छोड़कर उसने पूछा, ''फिर कब आऊँ?''

''यानी''

''यानी आप शहर में घूमेंगे-फिरेंगे न? आपको जहाँ जाना होगा, ले चलूँगा। वैसे यहाँ कब तक हैं?''

''कल शताब्दी से लौटेंगे।''

''तो आपको घुमाने के लिए कब आ जाऊँ?''

''भई, आज तो थके हैं। आराम करेंगे, कल घूमेंगे।''

''ठीक है बाबूजी, यह रहा मेरा मोबाइल नंबर, मुझे फोन करके बुला लीजिएगा।''

''अरे, तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं।''

''मोहन।''

''मोहन। अच्छा नाम है।''

दूसरे दिन घूमने का कार्य शुरू हो गया। वह बहुत प्रेम से एक के बाद एक स्थान दिखाता गया। मुझे

'बाबूजी' और पत्नी को 'अम्माँ' नाम से संबोधित करता रहा। घूम-घूमाकर होटल पर लौटे तो चाय पीने के लिए उसे भी कमरे में बुला लिया। वह बहुत संकोच के साथ आया। चाय-पान के साथ हमारी पारिवारिक वार्ता शुरू हो गई। पत्नी ने पूछा, ''बेटे, तुम ग्वालियर के हो?''

''नहीं अम्माँ! मैं मूलतः आगरा का हूँ। यहाँ आना पड़ गया।''

हमें लगा कि वह यह कहते-कहते कुछ भर आया है। इसलिए चुप रहे, लेकिन वह स्वयं बोलने लगा, ''आगरा में अपना घर है। माँ-बाप तो बचपन में ही गुज़र गए, बड़े भाई ने मेरी परवरिश की। भाई वकील हैं। मैं भी बी.ए. पास हूँ। कोई नौकरी खोज रहा था कि...''

एक चुप्पी सी छा गई। हमें लगा कि इसके साथ कोई अवांछित घटना घटी है। उसे छेड़ा नहीं, किंतु उसने फिर कहना शुरू किया, ''मैं नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। एक दिन भटककर लौट रहा था कि रास्ते में एक परिचित लड़की मिल गई, बदहवास सी, घिघियाती हुई बोली, ''मोहन, मुझे बचा लो।''

''क्यों, क्या हुआ?''

''मेरे माँ-बाप एक अधेड़ के हाथ मुझे बेच रहे हैं। मैं कुएँ में गिरकर जान दे दूँगी, किंतु उस खूसट अधेड़ के साथ नहीं जाऊँगी।''

''मैं बहुत असमंजस में पड़ गया। क्या करूँ? कर भी क्या सकता हूँ। मुझे लगा कि स्टेशन चलना चाहिए। वहाँ उसे ले गया और थानेदार से हकीकत बयान की। वे कुछ देर सोचते रहे कि क्या किया जा सकता है।''

थानेदार साहब बोले, ''इसकी एफ.आई.आर. लिखकर इसके माँ-बाप को हवालात में बंद कर देता, लेकिन फ़िलहाल चिंता इस लड़की की है कि आखिर इसके लिए क्या किया जाए?''

एक छोटी सी चुप्पी के बाद वे एकाएक बोले, ''तुम्हारी शादी हो गई है?'' मैंने न में सिर हिलाया।

तो बोले, ''तुम इससे शादी क्यों नहीं कर लेते?''

मैं तो इस आकस्मिक प्रस्ताव से चकरा गया, किंतु कुछ पल बाद लगा कि इसमें बुराई क्या हैं। मैंने कहा, ''सर, इससे तो पूछ लीजिए।''

थानेदार ने उससे पूछा तो उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। ''लेकिन।''

''लेकिन क्या मोहन?''

''बाबूजी, लेकिन यह कि भाभी अपनी बहन से मेरी शादी कराना चाहती रहीं। बात तय हो चुकी थी।''

''फिर?''

''बाबूजी, मैंने सोचा, भाभीजी की बहन से तो कोई भी अच्छा आदमी शादी कर लेगा। वहाँ कोई संकट नहीं है, लेकिन इस लड़की की तो जिंदगी खतरे में है। लड़की सुंदर भी है, परिचित भी और सबसे अहम बात यह कि वह संकट मैं है। इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी। लेकिन...''

''फिर लेकिन?''

''हाँ, अब समस्या यह कि विवाह एकदम तो न हो जाएगा। यदि लड़की घर गई तो फिर वही बेच दिए जाने का संकट। मैं साथ ले जाऊँ तो भैया-भाभी तो नाराज होंगे ही, इसके माँ-बाप मेरे ऊपर लड़की भगाने का केस कर देंगे। जब मैंने थानेदार के सामने यह समस्या रखी तो वे बोले, कुछ दिन के लिए इसे नारी-निकेतन में रखवा देता हूँ। लड़की से माँ-बाप के खिलाफ शिकायत लिखवाकर रख लेता हूँ।''

''पंद्रह दिन बाद उन्होंने मंदिर में उससे मेरी शादी करवा दी।''

मैंने कहा, ''मोहन, ऐसे थानेदार कहाँ होते हैं। मुझे तो इस घटना पर विश्वास ही नहीं हो रहा है। लगता है, कथा सुन रहा हूँ।''

''आप सही कह रहे हैं बाबूजी, लेकिन यह थानेदार कवि भी है। कवि-सम्मेलनों में कविताएँ पढ़ता है और इसकी कविताएँ मानवीय संवेदना से भरी होती हैं।''

''हाँ, तब ठीक है। भाई, हर क्षेत्र में कोई-न-कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है। हाँ, तब।''

''तब यह कि मेरे भाई-भाभी मुझसे खफा हो गए और हमें घर से निकाल दिया। एक तो मैंने उनकी साली

से शादी नहीं की, दूसरे जिस लड़की से की, वह किसी और जाति की है।''

''तो तुम लोग ग्वालियर आ गए।''

''हाँ, बाबूजी, आगरा में हमारा निबाह होना कठिन था। पराए शहर में भले ही कोई अपनापन न हो, किंतु यह परायापन उस अपनेपन से अच्छा है न, जो दिन-रात अप्रीतिकर व्यवहार बनकर तन-मन को उद्विग्न करता रहे।''

''हाँ, सही कह रहे हो।''

''तो यहाँ कोई नौकरी तो रखी नहीं थी। बस ऑटो का दामन थाम लिया और उसी के सहारे चल रहा हूँ।''

''वास्तव में तुम बहुत बड़े हो मोहन। बड़े-बड़े लोग तो नारी-हित में बड़े-बड़े लैक्चर देते हैं, लेख-कविताएँ लिखते रहते हैं, किंतु अपने व्यवहार में नहीं उतारते। लेकिन तुमने तो बहुत सहज भाव से एक लड़की को दुर्दशाग्रस्त होने से बचा लिया और अपने जीवन के साथ उसे सम्मानपूर्वक लगा लिया।''

''बाबूजी, इस कार्य से मुझे भी बहुत संतोष मिला। मैंने तो एक बार उसका उद्धार किया, किंतु वह तो प्राय: मुझे संकटों से उबारती रहती है।''

मोहन की यह कहानी हम पर छा गई और वह हमारे मन में कितना बड़ा हो गया।

गाड़ी का समय हो रहा था। मोहन हमें लेकर स्टेशन आ गया। उसे मैं पाँच सौ रुपए का नोट देने लगा। वह बोला, ''रहने दीजिए बाबूजी।''

''अरे यह तुम्हारा पारिश्रमिक है, कोई दान थोड़े ही दे रहा हूँ।''

''बाबूजी, मैंने माँ-बाप का प्यार नहीं पाया। कल से ही लग रहा है कि मुझे माँ-बाप मिल गए हैं। इस सुख के आगे पैसे का तो कुछ भी मोल नहीं है। पैसा तो और लोगों से कमाँ ही लेता हूँ।''

''बेटे, लेकिन मेरी भी तो सोचो। मैं बेटे का शोषण कैसे कर सकता हूँ?''

''लेकिन यह तो बहुत है। इतना लूँगा तो आपका शोषण हो जाएगा।'' यह कहकर वह पाँच सौ का नोट लेकर तीन सौ वापस करने लगा।

बोला, ''मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी। हाँ, जब भी ग्वालियर आइएगा, मुझे बुला लीजिएगा। मेरा फोन नंबर तो आपके पास है ही।''

''लेकिन मेरी एक शर्त है।''

''वह क्या बाबूजी?''

''ये पाँच सौ रुपए चुपचाप तुम्हें लेने ही पड़ेंगे।''

उसने तीन सौ रुपए अपनी जेब में रख लिये। जैसे कह रहा हो 'यह कैसी शर्त आपने रख दी बाबूजी।' कुछ क्षण बाद बोला, ''बाबूजी, आपका फोन नंबर तो मेरे फोन पर आ ही गया है। कभी-कभी फोन करता रहूँ क्या?''

''हाँ-हाँ भाई, शौक से। मुझे अच्छा लगेगा।''

''लेकिन आपका नाम तो मैंने पूछा ही नहीं।''

''मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी हैं कामना।''

और जब हम स्टेशन के अंदर जाने लगे तब वह आँखें में न जाने कितना अपनापन लिये हमें निहारता रहा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

यात्रा-भीरु यात्रा से डरनेवाला **अंट-शंट** मरजी में आए ऐसा, निरंकुश **आश्वस्ति** आश्वासन, तसल्ली **वांछित** इच्छा अनुसार **इन्तजार** प्रतीक्षा **वाट** राह **अतिरिक्त** उपरांत **छेड़ना** उकसाना **खूसट** अप्रिय **अधेड़** आधेड़ उम्रका प्रौढ **हवालात** जेल **अहम बात** मुख्य बात **प्रीतिकर** मनभावन **संवेदना** पीड़ा **मसीहा** देवदूत **उबारना** बचाना, से बाहर निकालना

मुहावरे

पाला पड़ना सम्बन्ध जुड़ना **चुप्पी-सी छा जाना** शांति छा जाना, **असमंजस में पड़ जाना** द्विधा में पड़ना, क्या करूँ क्या न करूँ यह समज में न आना, **निबाह होना** घर खर्च निकलाना **उद्विग्न करना** पीड़ा देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) लेखक को ग्वालियर क्यों जाना पड़ा?

(2) लेखक के न कहने पर भी ऑटोवाला उनका इन्तजार क्यों करने लगा?

(3) लड़कीने मोहन से घिघियाते हुए क्या कहा?

(4) मोहन लडकी से विवाह करने क्यों तैयार हो गया?

(5) थानेदार की क्या विशेषता थी?

(6) मोहनने ज्यादा पैसै लेने से क्यों इन्कार किया?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) लेखकने ऑटोवाले की बात को स्वीकृति क्यों दी?

(2) मोहन की पारिवारिक स्थिति क्या थी?

(3) लड़की किस बात के लिए तैयार नहीं थी? क्यों?

(4) लेखक मोहन को बहुत बड़ा क्यों बताते हैं?

3. विस्तार से उत्तर दीजिए :

(1) लेखक यात्रा से क्यों ड़रते थे?

(2) मोहन का चरित्र चित्रण कीजिए।

(3) लेखक के साथ मोहन ने अपनापन कैसा जताया?

4. निम्नलिखित विधान किसने किससे और क्यों कहा?

(1) ''इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी।''

(2) भाई हर क्षेत्र में कोई न कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है।

(3) मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी?

5. सही शब्द चुनकर योग्य उत्तर दीजिए।

(1) ऑटोवाले ने लेखक को नई जगह पर पहुँचा दिया, क्योंकि...

(अ) लेखक को दूसरी जगह घूमने जाना था।

(ब) वहाँ डॉक्टर हाज़िर नहीं था।

(क) डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी थी।

(2) बात करते हुए मोहन रुक गया और चुप्पी सी छा गई, क्योंकि...

(अ) कोई अवांछित घटना घटी थी।

(ब) नौकरी की तलाश में उसे आगरा से भटकते हुए ग्वालियर आना पड़ा।

(क) उसे एक लड़की मिल गई।

(3) लेखक को मोहन की बात कहानी-कथा सुन रहे ही ऐसी लगी, क्योंकि...

(अ) लेखक सोचने लगे कि कोई थानेदार ऐसा सहृद व्यवहार कर सकता है?

(ब) लेखक को मोहन की बात पर विश्वास नहीं आ रहा था।

(क) मोहन कोई कहानी सुना रहा था।

(4) मोहनने ज्यादा पैसे लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि...

(अ) मोहन चाहता था कि उसे इतना पराया न समजा जाय।

(ब) वह परिश्रम से ज्यादा पैसे लेने के पक्ष में नहीं था।

(क) वह चाहता था कि लेखक दूबारा ग्वालियर आए तो उसके ही ऑटों का उपयोग करें।

6. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) पाला पड़ना (2) असमंजस में पड़ना (3) दामन थाम लेना

7. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द दीजिए :

वांछित, परिचित, समस्या, मसीहा, प्रीति, संतोष, शोषण

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- मैं ऑटोवाला होता तो.... विषय पर छात्र अपने विचार व्यक्त करे।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- नारी सशक्तिकरण-छात्रों से एवं नारी सुरक्षा के विषय में साहित्य सामग्री का संग्रह करवाइए।
- किसी व्यक्ति का साक्षात्कार करने के लिए प्रश्नसूची तैयार करें।
- छात्रों के द्वारा किसी व्यक्ति का परिचय लिखवाइए।
- किसी घटना का रिपोर्ट तैयार करवाइए।

●

12	# रानी

महादेवी वर्मा

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1583 ई.)

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा अर्थात् 'मैं नीर भरी दु:ख की बदरी' और तुम को नींव में ढूँढा, तुममें ढूँढी पीड़ा।' कहनेवाली सहृदय, भावुक, अत्यंत संवेदनशील और समग्र नीव सृष्टि पर अनुकंपावर्षेण करनेवाली छायावादी युग की अप्रतिम रचनाकार। छायावादी युग के चार स्तंभ गिने जाते हैं- प्रसाद, पंत, महादेवी और निराला। इनमें प्रसाद के साथ सदैव इतिहास बोध रहा तो पंत प्रकृति के कोमल कांत पदावली के रचनाकार के रूप में पहचाने गये। निराला अपनी ओजस्विता और रौद्रता के लिए तो महादेवी धीर गंभीर दर्द की दास्तान सुनानेवाली कवयित्री के रूप में पहचानी गयी।

फर्रुखाबाद में (उत्तर प्रदेश) जन्मी-महादेवी सही अर्थ में एक विदूषी और प्रगल्भा नारी के रूप में समग्र जीवन जी गयी। मुख्यतया महादेवी कवयित्री ही-रही किंतु 'स्मृति की रेखाएँ' जैसी रचना के द्वारा उत्तम गद्यकार-रेखाचित्रकार के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या और कुलगुरु के पद पर रह कर शिक्षा के क्षेत्र में आपने अनुपम योगदान दिया है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ आदि आप की बहुचर्चित एवं लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

यहाँ 'रानी' नामक एक घोडी उनके दो साथी 'निक्की' और 'रोजी' के साथ आयी है- सम्मिलित है जिसका बड़ा मार्मिक और भावुकतापूर्ण शैली में चित्र अंकित किया है। ऐसा लगता है यह नेवला, यह कुत्ती और यह घोड़ी हमारे सामने ही हैं। पशु-पंछी और निर्दोष भोले ऐसे प्राणियों के प्रति महादेवीजी का स्नेह और प्रेम छलकता नज़र आता है।

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टूओं या सफेद गधों (जिसकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्धन किया था।) पर घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा, अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे पर बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र (मेमारंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है तो हमें भी वह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबूजी ने हँसते हुए पूछा- सफेद टट्टू पर बैठोगे? 'तुम कहो, तुम कहो' के साथ ठेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया- सफेद टट्टू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है।

पता नहीं हमारे ज्ञान के वजस्त्र स्त्रोत रामा को बाबूजी ने डाँटा या नहीं, परंतु कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा-सा चाकलेटी रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अत: बाहर से टट्टू को लाने के लिए दीवाल में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की उसकी देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया।

अब तो हम उस छोटे टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे तथा हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने-फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था और हमारी खिड़की तक दरवाजे में परिवर्तित नहीं हो सकी, जिससे हम रोजी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है। हम सब चार-पाँच दिन उससे रुष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त ही कर ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कहकर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू को माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख-दु:ख की गाथा सुनते-सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताजमहल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह वहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में वसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी, काली-स्वच्छ

और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथूने जिन्हें फुला-फुलाकर चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओठोंवाला लंबा मुँह जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक है, सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परंतु इतने दीर्घ काल के उपरांत भी स्मृतिपट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती है जैसे किसी अदृश्य स्याही से लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

हम बार-बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोजी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अतः अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बाँधने के लिए तो बना नहीं था अतः उसकी दीवार में एक खुली आल्मारी और कई आतेताक थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गर्दन में झूल-झूलकर, उसके कान और अयाल में फूल खोंस-खोंसकर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला-खिलाकर थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरंभ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुंदर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरेवाली ऐसी जीन बनवाई गई जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी-बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सबेरे भाई-बहन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ यह कार्यक्रम दोहराया जाता। परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोही प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी? अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सब के सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी-बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा लेने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूँछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हों।

रानी हम सब की शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठनेवालों को वह दुल्की चाल से इधर-उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परंतु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दुःखद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़-बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़नखटोले पर सँभाला, परंतु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो।

साथियों की चीख-पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछाने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चातापभरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए।

एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यतः हम कोई भी नया कपड़ा

या आभूषण पहनकर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेरमुँहवाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किन प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछ-ताँछ की तब खोज आरंभ हुई पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कान को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गुड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

एक घटना अपनी विचित्रता में स्मरणीय है। एक सबेरे उठने पर हमने रानी के पास एक छोटे-से घोड़े के बच्चे को देखा। 'यह कहाँ था?' कह-कहकर हमने रामा को इतना थका दिया कि उसने निरुपाय घोषणा की कि वह नया जीव रानी के पेट में दाना-चारा खाकर सो रहा था। भाई ने उत्साह से पूछा 'और भी है' और रामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

अब तो हम विस्मित भी हुए और क्रोधित भी। ये छोटे जीव कोई काम-धाम नहीं करते और हमको पीठ पर बैठाकर दौड़नेवाली रानी का दाना-चारा स्वयं खाकर उसके पेट में लेटे रहते हैं।

भाई ने कहा-रानी का पेट चीरकर हम कम-से-कम एक और बच्चा घोड़ा निकाल लें- तब बच्चे घोड़ों पर वे छोटे बहिन-भाई बैठेंगे और रानी मेरी सेवा में रहेगी। प्रस्ताव मुझे भी उचित जान पड़ा पर जब एक दोपहर को वह कहीं से शाक काटने का चाकू ले आया तब मेरे साहस ने जवाब दे दिया। एक और भी समस्या की ओर हमारा ध्यान गया। आखिर हम रानी का पेट सिएँगे कैसे? माँ की महीन-सी सुई से तो सीना संभव नहीं था। टाट सीने का बड़ा सूजा रामा अपनी कोठरी में रखता था जहाँ हमारी पहुँच नहीं थी। कुछ दिनों के उपरांत जब रानी का अश्व शिशु कुछ बड़ा होकर दौड़ने लगा तब हमें न अपना क्रोध स्मरण रहा और न प्रस्ताव।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बदरी बादल **अनुकंपा** दया, भावना प्रकट करना **रियासत** राज्य **ठेलमठाल** चलना **विलायत** ब्रिटैन **विस्थापित** स्थान से छुटा हुआ **अस्तबल** घोड़ों का आवास **अयाल** लगाम, बागड़ौर, **संटी** सोटी **बरामदा** बरंडा

मुहावरे

आँखों में बसना हृदय में समाना, **जवाब दे देना** अंत हो जाना, नष्ट होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) 'रानी' कौन-सी साहित्यिक विद्या है?

(2) लेखिका ने रानी के अलावा और कौन-कौन से चरित्र लिए है?

(3) लड़कों ने स्मृतिपत्र में किस अन्याय की बात लिखी थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) रानी के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए कैसे प्रयास किये गये?

(2) रानी की पीठ पर सवारी करने पर कौन-सी दुर्घटना घटित हुई? क्यों?

3. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) ज्ञान में वृद्धि करनेवाला

(2) बच्चे सरलता से कर सकें ऐसी प्रवृत्तियाँ

(3) घोड़े पर बैठकर की जानेवाली सवारी

4. विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :

(1) अपराधी (2) प्रसन्नता (3) दंड

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रेखाचित्र 'रानी' में प्रस्तुत पालतु प्राणियों और उनकी विशेषताओं के बारे में जानकारी दें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'पशु और अबोल प्राणियों-पशुओं के साथ सद्भाव और प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।' विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन करें।
- महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्र, संस्मरण 'गूँगिया', 'ठकुरीबाबा' आदि के बारे में पात्रों को जानकारी दें।

●

वर्तनी

वर्तनी को उर्दू में 'हिज्जे' और अंग्रेजी में 'Spelling' कहा जाता है। जिस शब्द में जितने वर्ण या अक्षर जिस अनुक्रम में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उसी क्रम में लिखना ही 'वर्तनी' है।

हम वर्तनी-संबंधी कुछ जानकारियों का अभ्यास करेंगे। उन्हें लिखते एवं बोलते समय मनन करने से वर्तनी-दोष निश्चित रूप से दूर हो जाएगा-

वर्णों की लिखावट में सावधानी :

- 'ख' को 'रव' की तरह न लिखें इससे 'ख', 'रव' बनकर वर्ण से शब्द बन जाएगा और अर्थ हो जाएगा-दाना। जैसे रवादार (दानेदार)
- 'घ' पर पूरी शिरोरेखा होती है जबकि 'त' वर्गीय व्यंजन 'ध' का पूर्व का गोलवाला शिरा मुड़ा होता है और मुड़े भाग तथा शिरोरेखा के बीच रिक्त स्थान रहता है।
- इसी तरह थ, भ, य, श, क्ष और श्र की लिखावट में ऊपर से मुड़े भाग के ऊपर शिरोरेखा नहीं होती। भ के ऊपर पूरी तरह से शिरोरेखा देने से 'म' का भ्रम पैदा हो सकता है।
- निम्नांकित संयुक्ताक्षर एवं इन संयुक्ताक्षरों का जिन शब्दों में उपयोग हुआ है, ऐसे शब्दों का अध्ययन कीजिए।
  - द् + व = द्व - विद्वान, द्वार
  - द् + द = द्द - तद्दन, राजगद्दी
  - द् + म = द्म - पद्म, छद्म
  - द् + य = द्य - पद्य, विद्या
  - द् + ध = द्ध - युद्ध, प्रसिद्ध
  - द् + घ = द्घ - उद्घाटन, उपोद्घात
  - ह् + य = ह्य - बाह्य, सह्य
  - ह् + ऋ = हृ - हृदय, अपहृत
  - श् + र = श्र - श्रवण, श्रेष्ठ
  - ट् + र = ट्र - राष्ट्र, ट्रक
- संयुक्ताक्षरों का प्रयोग हुआ हो, ऐसे अन्य शब्द अपनी किताब

अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु :

पूर्ण अनुस्वार	अर्ध-अनुस्वार (चन्द्रबिन्दु)
अंत	आँत
गंध	गाँव
तंतु	ताँत
दंभ	दाँत
पंच	पाँच
हंस	हँसी

- ऊपर दिये गए उदाहरणों में अंत, दंभ, पंच इत्यादि में जिस चिह्न (.) का प्रयोग किया गया है उसे 'अनुस्वार' कहते हैं; और आँत, दाँत, पाँच इत्यादि में जिस चिह्न (ँ) का प्रयोग हुआ है, उसे अर्ध-अनुस्वार या चन्द्रबिन्दु कहते हैं।

पूर्ण अनुस्वार ङ्, ञ्, ण्, न् और म इन अनुनासिक पंचम वर्णों की सहायता से भी लिखा जाता है। इनमें से प्रत्येक अपने वर्ग के अक्षरों के साथ संयुक्त वर्ण के रूप में प्रयुक्त होता है:-

क	ख	ग	ध	....	के साथ	....	ङ
च	छ	ज	झ	....	के साथ	....	ञ
ट	ठ	ड	ढ	....	के साथ	....	ण
त	थ	द	ध	....	के साथ	....	न
प	फ	ब	भ	....	के साथ	....	म

पूर्ण अनुस्वार दो तरह से लिखा जाता है। उसके लिखने की दोनों रीतें निम्नांकित हैं :-

वर्ग के अंतिम अनुनासिक वर्ग के साथ	अनुस्वार के चिह्न के साथ
शङ्कर, शंङ्ख - ङ्	शंकर, शंख
अञ्जन, चञ्चल - ञ्	अंजन, चंचल
घण्टा, डण्डा - ण्	घंटा, डंडा
चन्दन, सन्त - न्	चंदन, संत

अर्धानुस्वार का उच्चारण पूरे अनुस्वार की अपेक्षा कोमल और हल्का होता है। इसे पूरे अनुस्वार की भाँति अनुनासिक वर्ण के साथ नहीं लिखा जा सकता। उदाहरण के लिए 'अंत' को हम 'अन्त' लिख सकते हैं, पर 'आँख' को 'आन्ख' नहीं लिख सकते। अतएव जहाँ अनुस्वार का उच्चारण कोमल हो और जिसे ङ्, ञ्, ण् न् और म् आदि अनुनासिक संयुक्त वर्णों से न लिखा जा सके वहाँ अर्धअनुस्वार समजना चाहिए और उसे चन्द्रबिन्दु के साथ लिखना चाहिए।

शिरोरेखा के ऊपर लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर सामान्यतया 'अनुस्वार' तथा नीचे लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होता है। जैसे-

शिरोरेखा के ऊपर	शिरोरेखा के नीचे
मैं, क्यों, हैं, उन्हें, उन्होंने, इन्हें, इन्होंने, किन्हें, किन्होंने, जिन्हें, जिन्होंने	कहाँ, आँगन, अँगना, जहाँ, गाँधी, आँधी, आँख, जाँघ, माँद, नाँद, बाँध, काँख

'श', 'ष' एवं 'स' का प्रयोग :

- यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पहले 'अ' या 'आ' हो तो 'स' नहीं बदलता।
  जैसे - दस ('स' के पहले 'अ')
  पास, घास, विश्वास, इतिहास ('स' के पहले 'आ')
- यदि अ/आ से भिन्न स्वर रहे तो 'ष' का प्रयोग होता है।
  जैसे - प्रेषित, आकर्षित, विषम, भूषण, आकर्षण, हर्षित, धनुष आदि।
- 'ह' वर्ग के पूर्व 'ष' का प्रयोग होता है।
  जैसे - क्लिष्ट, विशिष्ट, नष्ट, कष्ट, भ्रष्ट, षडानन, षोडश आदि।
- 'ऋ' के बाद 'ष' का प्रयोग होता है।
  जैसे - ऋषि, कृषि, वृष्टि, कृषक, तृषित, ऋषभ आदि।

- आगे 'च' वर्ग रहने पर 'श' का प्रयोग होता है।

  जैसे - निश्चित, निश्चय, निश्छल आदि।
- यदि 'श' एवं 'ष' दोनों का साथ प्रयोग हो तो पहले 'श' फिर 'ष' का प्रयोग होगा। यदि 'स' भी रहे तो क्रमशः स, श और ष होगा।

  जैसे - विशेष, शेष, शोषण, शीर्षक, विश्लेषण, संश्लेषण आदि।

क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ का प्रयोग :

क़तल	ख़बर	ग़रीब	ज़माना	फ़कीर
क़दम	ख़र्च	ग़लत	ज़मीन	फ़र्ज
क़द्र	ख़ानदान	ग़ाफिल	ज़हर	फ़रमान
क़लम	ख़ुदा	गुस्सा	ज़िन्दगी	फ़रेब
क़ाबिल	ख़ुश	ग़ैर	नमाज़	फ़ुरसत

ऊपर दिये गए उदाहरणों को ध्यान से देखें। इनमें क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ के बगल में नुक्ता या बिन्दी लगाई गई है। इन शब्दों के बगल में बिन्दी केवल इनके उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए लगाई जाती है। अरबी-फ़ारसी भाषा के इन शब्दों में निर्देशित वर्णों का उच्चारण कोमल और हल्का होता है।

ड़ और ढ़ का प्रयोग:

(1)	डमरु	अकड़	(2)	ढंग	गढ़
	डर	बड़ाई		ढब	पढ़ाई
	डाक	रणछोड़		ढेरी	बाढ़
	डाली	झाड़		ढोल	सीढ़ी

ऊपर दिये गए नं. (1) और (2) के शब्दों को ध्यान से पढ़िए । नुक्तावाले इन 'ड़' और 'ढ़' के संबंध में यह बात याद रखनेलायक है कि दोनों अक्षर कभी शब्द के शुरु में और अनुस्वार के बाद नहीं आते।

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के उदाहरण:

(1) 'इ' की जगह 'ई' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
ईस	इस	फीर	फिर
कीस	किस	रीहा	रिहा
जीस	जिस	लीया	लिया
चाहीए	चाहिए	बहीन	बहिन
नीकट	निकट	वीकट	विकट
कोशीश	कोशिश	विदीत	विदित
गीरना	गिरना	मीलना	मिलना
कठीनाई	कठिनाई	विकसीत	विकसित

(2) 'ई' की जगह 'इ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
चिज़	चीज़	सति	सती
नारि	नारी	स्त्रि	स्त्री
निंद	नींद	महिना	महीना

निचे	नीचे	यक़िन	यक़ीन
पिछे	पीछे	विनति	विनती
क़िमत	क़ीमत	शरिर	शरीर
तिसरा	तीसरा	गृहिणि	गृहिणी
बिमार	बीमार	स्विकार	स्वीकार
नज़दिक	नज़दीक	हारजित	हारजीत

(3) 'ऊ' की जगह 'उ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तुने	तूने	भुल	भूल
दुध	दूध	सुर्य	सूर्य
पुज्य	पूज्य	शुरु	शुरू
उपर	ऊपर	हिन्दु	हिन्दू
क़ानुन	क़ानून	मालुम	मालूम
दुसरी	दूसरी	मज़मुन	मज़मून
पुछना	पूछना	महसुस	महसूस
फ़िजुल	फ़िजूल	प्रतिकुल	प्रतिकूल
जरुरत	जरूरत	गोमुत्र	गोमूत्र

(4) 'उ' की जगह 'ऊ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तूम	तुम	पूजारी	पुजारी
तूम्हारा	तुम्हारा	सूख	सुख
पहूँचना	पहुँचना	सचमूच	सचमुच

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के निर्देशित उदाहरणों के अलावा कुछ और भूलों के उदाहरण और उनसे बचने के सामान्य नियम निम्नांकित हैं:

(1) जब संयुक्ताक्षर के अंत्य स्वर पर भार हो तो उसके

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कूत्ता	कुत्ता	कीश्ती	किश्ती
गूच्छा	गुच्छा	चीट्ठी	चिट्ठी
बील्ली	बिल्ली	नूस्खा	नुस्खा
सूस्त	सुस्त	लूत्फ़	लुत्फ़

(2) ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन के रूपों में दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' में बदल जाती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
थालीयाँ	थालियाँ	दासीयाँ	दासियाँ
ज़िन्दगीयाँ	ज़िन्दगियाँ	पोथीयाँ	पोथियाँ
टोपीयाँ	टोपियाँ	सदीयाँ	सदियाँ

(3) संस्कृत से आये हुए तत्सम शब्दों की अंत्य 'ति' अधिकतर ह्रस्व होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
गती	गति	मती	मति
पती	पति	रीती	रीति
भक्ती	भक्ति	स्थिती	स्थिति

(4) श्रेष्ठतावाचक शब्दों का प्रत्यय 'इष्ट' की जगह 'इष्ठ' होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कनिष्ट	कनिष्ठ	धर्मिष्ट	धर्मिष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ	बलिष्ट	बलिष्ठ
जयेष्ट	ज्येष्ठ	श्रेष्ट	श्रेष्ठ

(5) 'ईय' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
जातिय	जातीय	देशिय	देशीय
प्रांतिय	प्रांतीय	वर्षिय	वर्षीय
राजकिय	राजकीय	स्वर्गिय	स्वर्गीय

(6) सामान्यतया 'इक' प्रत्यय में 'इ' ह्रस्व होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
औद्योगीक	औद्योगिक	नैतीक	नैतिक
ऐच्छीक	ऐच्छिक	शारीरीक	शारीरिक
दैनीक	दैनिक	स्थानीक	स्थानिक

(7) सामान्यतया 'ईन' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अर्वाचिन	अर्वाचीन	प्राचिन	प्राचीन
नविन	नवीन	कुलिन	कुलीन
पराधिन	पराधीन	स्वाधिन	स्वाधीन

प्रत्यय संबंधी भूलें :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
उत्कर्षता	उत्कर्ष	ऐक्यता	ऐक्य / एकता
औदार्यता	औदार्य/उदारता	कार्पण्यता	कृपणता / कार्पण्य
गौरवता	गौरव / गुरुता	दारिद्रता	दरिद्रता / दारिद्रय
धैर्यता	धीरता / धैर्य	पौरुषत्व	पौरुष / पुरुषत्व
साम्यता	साम्य / समता	वैमनस्यता	वैमनस्य
सौजन्यता	सौजन्य / सुजनता	सौदर्यता	सुन्दरता / सौंदर्य

उपर्युक्त शब्दों के उदाहरण से पता चलता है कि, भाव प्रत्ययांत शब्दों के बाद प्रत्यय लगाना ठीक नहीं है।

हलन्त का प्रयोग :

- मान्/वान्/हान् प्रत्ययान्त शब्दों में हलन्त का प्रयोग अवश्य होना चाहिए ।
  जैसे - श्रीमान्, आयुष्यमान्, महान्, विद्वान्
- त्/मम्/उत् प्रत्ययान्त तत्सम शब्दों में हलन्त का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे - स्वागतम्, जगत्, परिषद्, पश्चात्, शरद्, सम्राट्, विद्युत् आदि।

ये दोनों प्रचलित हैं और सही भी :

दुकान	-	दूकान	उषा	-	ऊषा
अंजलि	-	अंजली	गरमी	-	गर्मी
सरदी	-	सर्दी	वरदी	-	वर्दी
तुरग	-	तुरंग	भुजग	-	भुजंग
बिलकुल	-	बिल्कुल	हलुआ	-	हलवा
विहग	-	विहंग	रियासत	-	रिआसत
आत्मा	-	आतमा	सोसाइटी	-	सोसायटी
कलश	-	कलस	मुस्कान	-	मुसकान
धबराना	-	धबड़ाना	एकत्र	-	एकत्रित
चाहिए	-	चाहिये	ग्रस्त	-	ग्रसित
दम्पती	-	दम्पति	जाए	-	जाये
पृथिवी	-	पृथ्वी	पिंजरा	-	पिंजड़ा
वशिष्ठ	-	वसिष्ठ	सामान्यत:	-	सामान्यतया

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप के सामने (3) का चिह्न लगाइए :

(क) आविष्कार ( ) आविष्कार ( ) आविषकार ( ) आविश्कार ( )

(ख) पूजनीय ( ) पूज्यनीय ( ) पुजनीय ( ) पुज्यनीय ( )

(ग) सुषोभित ( ) शुसोभित ( ) सुसोभित ( ) सुशोभित ( )

(घ) श्रंगार ( ) शृंगार ( ) श्रृंगार ( ) श्रिंगार ( )

(ङ) स्वास्थ ( ) सवास्थ्य ( ) स्वासथ्य ( ) स्वास्थ्य ( )

(च) कवयित्री ( ) कवियित्री ( ) कवियत्री ( ) कवियित्रि ( )

2. निम्नलिखित शब्दों में अशुद्ध वर्तनीवाले बीस शब्द हैं। उन्हें छाँटकर उनके सामने उनके शुद्ध रूप लिखिए :

नैन	पीढ़ी	उलंघन	शुरु	प्रसाद	निर्दयी	शब्दकोश
कृपया	अमावश्या	दृष्टि	उसर	ऊर्जा	एच्छिक	वंदना
सहस्त्र	एश्वर्य	डमरु	संतुष्ट	बढई	एनक	हंसमुख
दिवार	अतएव	वाटिका	पढ़ाई	पाँचवाँ	अरोग्य	उद्देश्य
लडाई	बांसुरी	बुधवार	अनधिकार	श्रीमती	सन्मुख	जाग्रति

अशुद्ध वर्तनीवाले शब्द तथा उनके शुद्ध रूप :

1.	....	....	10.	....	....
2.	....	....	11.	....	....
3.	....	....	12.	....	....
4.	....	....	13.	....	....
5.	....	....	14.	....	....
6.	....	....	15.	....	....
7.	....	....	16.	....	....
8.	....	....	17.	....	....
9.	....	....	18.	....	....

3. निम्नलिखित वाक्यों में दो-दो शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। अशुद्ध शब्दों के स्थान पर शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हुए वाक्यों को दुबारा लिखिए :

(1) गुरूजीने छात्रों को आशीर्वाद दिया।

(2) नेताजीने औजस्वी भाषण दिया।

(3) मैने प्रातकाल घास पर औस पड़ी देखी।

(4) नोकर तोलिया लेकर आया।

(5) बूड़ा सीड़ियाँ नहीं चढ़ पाया।

(6) भारत ने औद्योगिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की है।

(7) ददीचि ने धर्म की रक्षा के लिए अपनी हड्डीयाँ दे दी।

(8) व्यापार में घाटा होने के कारण वह टनटनगोपाल हो गया है।

(9) हमें दुसरों के कार्य में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिए।

(10) उसकी अलोचना सुनकर मुझे कष्ट हुआ।

•

13 नीति के दोहे

रहीम

(जन्म : लगभग 1553 ई. : निधन : सन् 1626 ई.)

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीमखान खाना था। उनके पिता का नाम बैरमरबाँ था। जो अकबर के अभिभावक थे। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की कार्यक्षमता और बुद्धिमत्ता से अकबर बहुत प्रभावित थे और इसीलिए उन्होंने रहीम को अपने दरबार का महामंत्री का सर्वोच्च पद प्रदान किया था। रहीम संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान थे। दानी के रूप में बहु सुविख्यात है। जीवन के व्यावहारिक अनुभवों को उन्होंने अपनी 'सतसई' में व्यक्त किया है।

प्रथम दोहे में परहित की भावना, दूसरे दोहे में सही संबंध की रीत और सच्चा प्यार, तीसरे दोहे में छोटी चीज़ का महत्त्व, चौथे दोहे में सही दीनबंधु की बात की गई है। पाँचमें दोहे में कड़वे वचन बोलनेवाले की स्थिति का वर्णन है। छठवें दोहे में उत्तम व्यक्ति की प्रवृत्ति, सातवें दोहे में बिगड़ी हुई बात को छोड़ देने की, आठवें दोहे में धैर्य का महत्त्व तथा अंतिम दोहे में किसीसे माँगना नहीं चाहिए - इस बात को उद्धृत किया है।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति सुचहिं सुजान ॥1॥

कहिं रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥2॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि॥3॥

दीन सबनको लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय॥4॥

खीरा को मुँह काटिकै, मलियत नोन लगाय।
रहिमन करुए मुखन की, चहिए यही सजाय ॥5॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥6॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगर दूध को, भथे न माखन होय॥7॥

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥8॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनसे पहिले वे मुएँ, जिन मुख निकसत नाहिं॥9॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

तरुवर वृक्ष **परकाज** दूसरों के काम **बिपत्ति** आपत्ति **मीत** प्यारा **लघु** छोटा **तरवारि** तलवार **दीन** गरीब **सम** समान **खीश** ककड़ी **करुण** करुए **भुजंग** साँप **बिगरी** बिगड़ी हुई **थोरे** थोड़े **निकसत** निकलना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) रहीम के अनुसार संपत्ति का महत्त्व क्या है?

(2) छोटों का तिरस्कार क्यों नहीं करना चाहिए?

(3) सुई का काम कौन नहीं कर सकता?

(4) उत्तम प्रवृत्ति का क्या लक्षण हैं?

(5) सीसे क्यों नहीं चाहिए?

(6) माँगने के बारे में रहीम क्या कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) वृक्ष और सरोवर के उदाहरण से रहीम हमें क्या समझाते हैं?

(2) रहीम कड़वे मुखवाली मनुष्य की प्रकृति को कैसे समझाते हैं?

(3) 'लाख प्रयत्न करने पर बिगडी हुई बात नहीं बनती' - ऐसा रहीम किस उदाहरण से समजाते हैं ?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।'

(2) चंदन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रहीम के दोहो में निष्पन्न नीतिविषयक बात को चुनकर सुवाच्य अक्षरों में लिखिए और स्पष्ट कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रहीम के अन्य दोहे का संग्रह कीजिए।

●

14 युग और मैं

नरेन्द्र शर्मा

कवि नरेन्द्र शर्मा का जन्म 1913 ई. में जहाँगीरपुर (बुलंदशहर) में हुआ। शिक्षा प्रयाग विश्व विद्यालय में एम.ए. तक हुई। वे आकाशवाणी के विविध भारती कार्यक्रम के प्रधान के रूप में सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

उनका नाम प्रगतिवादी कवियों में भी लिया जाता है, जो अंशतः उचित भी है। नरेन्द्र शर्मा के कवि जीवन का विकास भी सुमित्रानंदन पंतजी की तरह तीन युगों में रहा है। वे पहले प्रेम और विरह के छायावादी गीतकार रहे, फिर प्रगतिवादी कवि के रूप में और अंत में अरविंदवादी दार्शनिक के रूप में। उनके कविता संकलनों में प्रमुख हैं– प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, अग्निशस्य, रक्तचंदन, लालनिशान, पलाशवन आदि कवितासंग्रहों के अतिरिक्त नरेन्द्रजी का एक कहानीसंग्रह भी है– 'कड़वी मीठी बातें' उनकी कई कविताओं में तत्कालीन समय की वेदना प्रतिबिंबित है।

'युग और मैं' कविता में देश में जो विनाशक वातावरण पैदा हुआ, बस्तियाँ उजड़ने लगीं, मानवता जख्मी हुई, इस की कवि को असह्य पीड़ा है। सारी दुनिया की पीड़ा के सामने कवि को अपनी पीड़ा नगण्य लगती है। मनुष्य को धरती पर स्वर्ग निर्मित करने के लिए परमात्मा ने हाथ दिए हैं, पर अपने में देवत्व पैदा करने का काम अधूरा छोड़कर मनुष्य आत्मघाती बनकर एक-दूसरे का पराभव कर जगत के वैभव को तहस-नहस कर रहा है, इसकी वेदना 'युग और मैं' कविता में अभिव्यक्त हुई हैं।

उजड़ रहीं अनगिनत बस्तियाँ, मन, मेरी ही बस्ती क्या!
धब्बों से मिट रहे देश जब, तो मेरी ही हस्ती क्या!
बरस रहे अंगार गगन से, धरती लपटें उगल रही,
निगल रही जब मौत सभी को, अपनी ही क्या जाय कही?
दुनियाँ भर की दुःख कथा है, मेरी ही क्या करुणा कथा!
जाने कब तक धाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!
खौल रहे हैं सात समुन्दर, डूबी जाती है दुनिया
ज्ञान थाह लेता था जिस से, ग़र्क हो रही वह दुनिया!
डूब रही हो सब दुनिया, जब, मुझे डूबता ग़म तो क्या!
हाथ बने किसलिये? करेंगे भू पर मनुज स्वर्ग निर्माण!
बुद्धि हुई किस लिए? कि डाले मानव-जग-जड़ता में प्राण!
आज हुआ सबका उलटा रुख, मेरा उलटा पासा क्या!
मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
काम अधूरा छोड़, कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझ से छूटे तो क्या!
एक दूसरे का अभिभव कर, रचने एक नये भव को।
है संघर्ष-निरत मानव अब, फूंक जगत-गत वैभव को
तहस-नहस हो रहा विश्व, तो मेरा अपना आपा क्या!

शब्दार्थ और टिप्पणी

धब्बा दाग, कलंक **हस्ती** अस्तित्व **लपटें** ज्वालाएँ **समता** समानता **व्यथा** दु:ख, पीड़ा **रूख** वर्तन, व्यवहार **निखिल** सारी, संपूर्ण **अभिभव** आदर **भव** संसार, दुनिया **वैभव** संपत्ति **आपा** अभिमान

मुहावरे

गर्क होना डूब जाना **तहस-नहस होना** नष्ट होना **पासा उलटा पड़ना** परिस्थितियाँ विपरीत होना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) प्रस्तुत कविता के रचनाकार का नाम बताईए।
   (2) गगन और धरती से क्या हो रहा है?
   (3) सात समंदर में क्या हो रहा है?
   (4) काव्य-शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए।
2. **संक्षेप में उत्तर लिखिए :**
   (1) बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए हैं?
   (2) ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है?
   (3) मानव की क्या स्थिति हो गयी है?
3. **सविस्तार उत्तर दीजिए :**
   (1) कवि के ह्रदय में कैसी व्यथा है?
   (2) 'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए।
4. **संदर्भ सहित स्पष्टीकरण दीजिए :**
   (1) मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
   काम अधूरा छोड़कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
   सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या!
   (2) जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
   जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
   सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!
5. **विरोधी शब्द लिखिए :**
   हस्ती, अंगार, समुंदर
6. **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द देकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
   अनगिनत, गगन, दुनिया, निखिल, तहस-नहस, आपा

7. **ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं?**

जब मौत सभी को निगल रही हो? चारो ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो, हत्याएँ हो रही हों।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- हमारे आसपास परिस्थिति जब विषम हो गयी हो, हमें क्या करना चाहिए? इस विषय पर चर्चा-विमर्श कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- पंडित नरेन्द्र शर्माजी की अन्य कृतियों के बारे में छात्रों को परिचित करवाइये।

●